RNI:UPHIN/2016/46009
RNP/SHN/18-2019-21

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ
ब्रह्मज्ञान ही अमृत है।
सरसावा

तारतम मंजरी

वर्ष ४ अंक ६ सितम्बर २०१६ बुद्धजी शाका ३४१ विक्रम सवंत २०७६ पृष्ठ संख्या ३२

ब्रह्मज्ञान ही अमृत है

प्रेम ही जीवन है

आध्यात्मिक उन्नति के आठ सूत्र

१. नियमित ध्यान
२. नियमित स्वाध्याय
३. सात्विक अल्पाहार
४. प्रबल पुरुषार्थ
५. परब्रह्म के प्रति समर्पण एवं गुरुजनों के कथनों के प्रति श्रद्धा
६. शिष्टाचार
७. दृढ़ संकल्प
८. अटूट आत्मविश्वास

स्वत्वाधिकारी

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ

नकुड रोड, सरसावा, जिला-सहारनपुर, उ.प्र.

Email : shriprannathgyanpeeth@ gmail.com **Youtube**: SPJIN **Website**: www. spjin.org

Twitter : @Raajan Swami **Whats App**: +917533876060 ;

अनुक्रमणिका

1.	सम्पादकीय : तीनों स्वरूपों की बीतक	कृष्ण कुमार कालड़ा	1
2.	चितवनि से परहेज क्यों?	राहुल श्रीमाली	3
3.	गुरु पूर्णिमा	आचार्य सुभाष	6
4.	धर्म और मोक्ष	विनोद प्रसाद तिम्सिना	10
5.	लोगों का अंधविश्वास	गीता ठाकुर	12
6.	देह विकार	———	14
7.	धर्म की जड़ें ध्यान में	ज्योति	16
8.	श्री प्राणनाथ महिमा	केवल कृष्ण बजाज	18
9.	खुश कौन है	आत्मन	20
10.	कांवड यात्रा	आचार्य सुभाष	21
11.	रसोई के चोक से – भोजन का महत्व	महिमा दीदी	24
12.	आत्म–मंथन	श्री प्राणनाथ जी ज्ञानपीठ	26
13.	जो कुछ कह्या कतेब ने, सोई कह्या वेद	कृष्ण कुमार कालड़ा	28

'तारतम मंजरी के पाठकों से निवेदन'

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा से 'मासिक प्रकाशित होनेवाली " तारतम मंजरी' " पत्रिका वेवसाईट के साथ साथ व्हाट्सएप, फेसबुक के माध्यम से आप सभी के हाथों तक पहुचाने का प्रयास किया जाता है। अब नयी योजना के अन्तर्गत 'व्हाट्सएप में एक ग्रुप बनाई जायेगी, उस ग्रुप में केवल "तारतम मंजरी" ही प्रत्येक महीने डाली जायेगी'। सभी पाठकों से निवेदन है कि ग्रुप में जुडने के लियें आप 'अपना व्हाट्सएप नम्बर व्यक्तिगत रुप से या ईमेल के माध्यम से पूरा नाम,पता सहित भेजें'।

E-mail: tartammanjari@gmail.com
सम्पर्क सूत्र :–
+91 9725389547 (आचार्य सुभाष जी)
+91 9314193262 (जुनेजा बाबूजी)

सदस्यता शुल्क

भारत में	विदेश में
वार्षिक 130 रू.	650 रू.
आजीवन 1200 रू.	.....

लेख में प्रगट किये गये विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इनके प्रति सम्पादक, प्रकाशक उत्तरदायी नहीं है।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र सहारनपुर होगा।

प्रकाशन कार्यालय
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा, नकुड़ रोड, जिला–सहारनपुर (उ.प्र.)
पिन कोड–247232
सम्पर्क सूत्र–8650851010

Youtube:SPJIN
वेबसाईट :– www.spjin.org
ई मेल :– shriprannathgyanpeeth@gmail.co

सम्पादकीय

हाल ही में हमनें बीतक चर्चा का श्रवण किया। यह प्रक्रिया पिछले कई वर्षों से अनवरत चलती आ रही है। श्री निजानंद सम्प्रदाय के देश–विदेश स्थित सभी छोटे–बड़े मन्दिरों में प्रत्येक वर्ष श्रावण मास की पंचमी के दिन से एक माह के लिये बीतक चर्चा का आयोजन किया जाता है। लेकिन क्या इसका मूल उद्देश्य केवल मात्र श्रवण करना ही है या हमें इससे कुछ सीख लेनी चाहिये। बीतक का प्रत्येक प्रसंग एवं घटनाक्रम हमारे लिये प्रेरणास्पद है तथा हमें कुछ न कुछ शिक्षा प्रदान करता है। इसलिये, तारतम मंजरी के इस अंक से हम बीतक आधारित लेखों की एक श्रृंखला प्रारम्भ कर रहे हैं जिसमें किसी एक महत्वपूर्ण प्रसंग/घटनाक्रम का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर यह स्पष्ट किया जायेगा कि यह हमारे लिये क्यों प्रेरणादायी है तथा इससे हमें क्या शिक्षा लेनी चाहिये।

इसके अतिरिक्त कुछ प्रसंगों के सम्बन्ध में कुछ भ्रांतियां व्याप्त है जिनका श्री मुखवाणी से यथासम्भव निराकरण करने का प्रयास किया जायेगा।

यह श्रृंखला पूज्य श्री राजन स्वामी जी द्वारा वर्ष 2018 में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा में आयोजित बीतक चर्चा पर आधारित होगी।

तीनों स्वरूपों की बीतक

श्री बीतक साहब का प्रथम प्रकरण 'तीनों स्वरूपों की बीतक' से प्रारम्भ होता है। यहां प्रश्न यह उठता है कि ये तीन स्वरूप कौनसे हैं?इस सम्बन्ध में सुन्दरसाथ में कुछ भ्रान्तियां व्याप्त है। कुछ लोग इन तीन स्वरूपों में बसरी, मलकी तथा हकी को सम्मिलित करते हैं तो कुछ लोग ब्रज, रास और जागनी के स्वरूपों को। लेकिन यहाँ प्रसंग दूसरा है। चूंकि ब्रज की लीला भागवत में तथा रास की लीला 'रास' ग्रन्थ में वर्णित की जा चुकी है, अतः इन दोनों लीलाओं का इस सन्दर्भ में उल्लेख करने का कोई औचित्य प्रतीत नहीं होता। वस्तुतः यह जागनी ब्रह्माण्ड की बीतक है जो ब्रज और रास की लीलाओं के पश्चात् बना है और इसमें परमधाम की आत्माओं के साथ स्वयं अक्षरातीत पधारे हैं तथा जो विं.सं. 1638 से 1758 तक 120 वर्ष तक लीला करते हैं। इस सम्बन्ध में 'सनध' ग्रन्थ में कहा गया है : 'बीसा सौ वरसोलो कायम, होसी बैराठ सचराचर' अर्थात् जब जागनी लीला के 120 वर्ष बीत जायेंगे तब यह सारा ब्रह्माण्ड अखण्ड मुक्ति को प्राप्त करने का अधिकारी हो जायेगा। इसी प्रकार, बीतक साहब की निम्न चौपाई से भी स्पष्ट होता है कि यह 120 वर्ष की ही लीला है :

सोई सरत कुरान में, लिखी एक सौ बीस बरस।

चार पांच छठा दिन, तब जाहिर होवे अरस।। (2/24)

अब प्रश्न यह उठता है कि जागनी लीला के ये 120 वर्षों की गणना कैसे की जाय तथा तीन स्वरूप कौनसे हैं?जागनी लीला का प्रारम्भ वि.सं. 1638 में श्री देवचन्द्र जी के तन के प्रकट होने से प्रारम्भ होता है जो वि.स. 1712 तक चलती है। वि.सं. 1712 में श्री देवचन्द्र का तन ओझल हो जाता है। इसके पश्चात् वि.सं. 1712 से 1751 तक श्री प्राणनाथ जी के तन से लीला होती है। वि.सं. 1751 में श्री जी के अर्न्तध्यान के पश्चात् शेष सात वर्षों में आवेश लीला महाराजा श्री छत्रसाल जी के तन से सम्पादित होती है। ऐसी स्थिति में तीनों स्वरूपों का भाव श्री देवचन्द्र जी, श्री प्राणनाथ जी तथा श्री छत्रसाल जी से लिया जायेगा न कि बसरी, मलकी तथा हकी सूरत से। चूंकि यह जागनी लीला की बीतक है, अतः इसमें मुहम्मद साहब का बहुत संक्षेप में उल्लेख किया गया है।

उल्लेखनीय है कि लैल–तुल–कद्र की रात्रि में तीन तकरार होते हैं : ब्रज, रास और जागनी। जैसाकि हमने पूर्व में कहा है कि ब्रज और रास की लीला बीत चुकी हे। अब इस जागनी लीला में जो कुछ होना है – ब्रह्मात्मायें कैसे अवतरित होती है, श्री राज जी दोनों तनों में विराजमान होकर कैसे लीला करते हैं तथा शेष बचे सात वर्षों में कैसे श्री छत्रसाल जी को सारी शोभा देते हैं – यह सब कुछ ही बीतक साहब की विषय–वस्तु है। स्मरणीय है कि श्री छत्रसाल जी, जिनके अन्दर साकुण्डल की आत्मा है, ने समर्पण में सर्वोपरि भूमिका निभाई है, अतः यह शोभा उनको दी गई है। इसी प्रकार, श्यामाजी के स्वामित्व के जो 40 वर्ष है वे वि.सं. 1735 से 1775 तक होते हैं। इसमें 16 वर्ष श्री महामति जी के तथा 24 वर्ष श्री छत्रसाल जी के तन से पूर्ण होते हैं। इन 16 वर्षों में श्री महामति जी के तन से परमधाम की चारों किताबें, यथा खिलवत, परिक्रमा, सागर एवं सिनगार का अवतरण होता है तथा सुन्दरसाथ को यहां बैठे–बैठे परमधाम के 25 पक्षों का सुख प्राप्त होता है। इसी प्रकार, बीतक साहब की पद्मावती पुरी से अष्टप्रहर की सेवा की लगभग एक–चौथाई चौपाइयों का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में श्री छत्रसाल जी से हैं।

यदि यह संशय किया जाय कि जब श्री लालदास जी के तन से बीतक का लेखन कार्य प्रारम्भ हुआ था, उस समय श्री छत्रसाल जी द्वारा जागनी की कोई लीला नहीं हुई थी तो उन्हें तीनों स्वरूपों में कैसे माना जा सकता है। इसके समाधान में यही कहा जा सकता है कि श्री लालदास जी, जिनके तन में स्वयं अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी ने विराजमान होकर यह कार्य सम्पन्न किया था, की अर्न्तदृष्टि नें यह पहले से ही जान लिया था कि अब आगे की लीला श्री छत्रसाल जी के द्वारा होगी जिसका संकेत उन्होंने बीतक साहब में स्पष्ट रूप से कर दिया है :

साथ सौंप्या श्री राज को,
जाहिर में श्री महाराज।
अब हम फिरत धाम को,
तुम रहो सावचेत आज।। (7/23)

महाराजा जी सों कहा,
मैं देखत हों एक तुम।
तिस वास्ते सेवा साथ की,
सौंप चलत हम।। (7/24)

प्रस्तुति
कृष्ण कुमार कालड़ा, जयपुर

चितवनि से परहेज क्यों?

राहुल श्रीमाली, झालोद, दाहोद, गुजरात

जे.पी. दत्ता की एक फिल्म बॉर्डर बहुत पहले आई थी, उसमे अक्षय खन्ना ने धर्मवीर और पूजाभट्ट ने कमला का किरदार निभाया था। छुट्टी में धर्मवीर जब घर आता है तब कमला से उसकी शादी तय कर दी जाती है, शादी की शहनाइयों से घर गूंजने लगता है।पर ठीक उसी समय बॉर्डर पर जंग छिड़ जाती है और रेडियो पर खबर आ जाती है कि सभी फौजियों की छुट्टी केंसल कर दी गई है और सबको तुरंत वापिस अपनी अपनी कंपनी को जॉइन करना है।अब शादी रोक दी जाती है और दूसरे दिन सुबह ही धर्मवीर ट्रेन पकडने के लिए रवाना होता है। स्टेशन तक कमला उसे छोड़ने आती है तब धर्मवीर कहता है कि अगर मैं वापिस न आऊं तो किसी और से शादी कर लेना ... तब कमला बहुत हंसती है और धर्मवीर को एक छोटी कहानी सुनाती है कि एक बार मैं आगरा गई थी वहां स्टेशन पर एक आदमी अजीब अजीब पागलों सी हरकतें कर रहा था। कभी आगे जाता, कभी पीछे जाता। कभी बैठ जाता तो कभी खड़ा हो जाता कभी दौड़ने लगता तो कभी रुक जाता। फिर कमला धर्मवीर की आँखों मे आंखे डालकर कहती है कि पता है वह ऐसा क्यों कर रहा था। वह अपने साये से पीछा छुड़ा रहा था। कमला इतना कहकर रो देती है और धर्मवीर निःशब्द हो जाता है।

ठीक हमारे स्थानों की हालत उस पागल की अवस्था जैसी है। परमहंसों के त्याग और समर्पण की लौ पर टिका हुआ यह समाज चितवनि से मुँह फेरकर उन परमहंसों की रहेनी पर ही चोट कर रहा है। जैसे छांया शरीर से अलग नहीं हो सकती वैसे ही चितवनी के बिना आत्म जागृति हो ही नहीं सकती। परमहंसों के फोटो की आरती अगरबत्ती करने वाला यह समाज भूल गया है कि आप जिसके फोटो को श्रद्धा वश उनकी रहेनी के कारण पूज रहे है वह रहेनी वह अवस्था उन्होंने सात–सात, आठ–आठ घण्टे अपने आपको चितवनी में डूबोकर प्राप्त की हुई है और आप उसी चितवनी की प्रक्रिया को ठुकरा रहे हो? जब ब्रह्मवाणी ही डंके के चोट पर पहली ही किताब में यह कह रही है कि **पच्चीस पक्ष छे आपणा, तेमा कीजे रंग विलास।। रास १/७६** पर रंग विलास की वह प्रक्रिया तो चितवनी है, उसके बिना विलास कैसे हो सकता है, वह कोई बताए? जब ब्रह्मवाणी आगे यह कह रही है कि **चितवन जुगल किशोर की, देत कदम नूरजमाल–सिनगार ४/५४** तो फिर इस समाज के बन बैठे अग्रणी बताए कि वह चितवीन के अलावा वह कौन–सा रास्ता लेकर आए है कि जिससे नूरजमाल श्री (राज जी) के चरण मिले? जब बड़ी वृत में कहा जा रहा है कि **कै सुख तिरछी चितवनि..–१२४/६** तो फिर समाज के यह स्थान बताए कि चितवनी के अलावा वह कौन–सा रास्ता है जो यहाँ बैठे–बैठे हमें परमधाम का सुख देगा? जागनी रास का जागनी लीला का मुख्य

आधार ही चितवनी है। ब्रह्मवाणी अवतरण से पहले यह चितवनी तो शुरू हो चुकी थी। बहुत आगे क्यों जाए पांचवे दिन में बिहारी जी को गादी पर बिठाने के बाद, जब श्री जी एकान्त में चर्चा सुनाते तब चितवनी भी करवाते। स्पष्ट शब्द चितवनि है। देखिए–

तहां चितवनि धाम की, करत है सब कोय।
सरूप बस्तर बरनन,होने लगा सोय।।

बीतक–१७/२२

हँसी आती है यह देखकर कि इस समाज को अपने स्थानों में लगे नारियलों से परेहज नहीं, फोटो से परहेज नहीं, शोभायात्रा के नाम पर डीजे बजाने से परहेज नहीं, एक एक लाख पाठ करने से परहेज नहीं, धर्म के नाम पर पैसे उड़ाने से परहेज नहीं, कंठी माला से परहेज नहीं, सोने के सिंहासनों से परहेज नहीं, सोने की मूर्तियों से परहेज नहीं, हिंडोलों से परहेज नहीं, महाराजों के जन्म दिन मनाने से परहेज नहीं, जिस भागवत का अब औचित्य नहीं है उस भागवत से परहेज नहीं, पर हाँ इस समाज को चितवनी और चर्चनी से परहेज है। **परआतम ने आतम जोशे, त्यारे टलसे तिमिर घोर जी। प्र. गु. ३०/४३** इस प्रक्रिया को पूर्ण करने की जो राह चितवनी है उससे परहेज है। मैं जरूर पूछना चाहता हूँ कि जिस अष्ट प्रहर की सेवा के प्रक्रिया से यह समाज और स्थान चल रहे है क्या उस अष्ट प्रहर की लीला में चितवनी नहीं थी?पन्ना जी की अष्ट प्रहर की लीला में पहले प्रहर में ही चितवनि का स्पष्ट उल्लेख है।

श्री राज अस्नान करके,
तिलक चंदन का समीर मिलाए।
भाल में आप देय के,
कर चितवन साथ को दिखाए।।

बीतक– ६३/५२ प्रहर प्रथम

तो फिर अष्ट प्रहर से चलने वाले हमारे स्थानों में अष्ट प्रहर की सब लीला है पर चितवनी आखिर क्यों नहीं है? क्यों हमारे मंदिरों में जैसे श्री जी खुद चितवनि करवाते थे ऐसे चितवनी नहीं करवाई जाती और सुन्दरसाथ समाज को कर्मकाण्ड के जाल में उलझाने में ही सारी ऊर्जा लगाई जा रही है। परंपरा का वास्ता देकर अगर सही समय पे अष्ट प्रहर की सभी आरती, भोग, मजलिस सब कुछ हो सकता है तो उसी परंपरा के अनुसार आखिर आधे घण्टे के लिए भी चितवनी क्यों नहीं हो सकती?

यह अवश्य याद रखिए हमारे स्थान समाज के दर्पण है। हमारे स्थान जो करेंगे जो राह दिखाएंगे वही यह समाज करेगा। अगर स्थान चितवनी करवाने लग जाए तो सुन्दरसाथ सेवा पूजा की तरह ही चितवनी भी सुबह शाम अपने आप अपने घरों में करने लग जायेगा। सेवा पूजा चितवनी और चर्चनी का ही सूक्ष्म रूप है पर समाज हमारे स्थानों मे चितवनी की प्रक्रिया ही नहीं है। इसीलिए तो इतनी उत्तम सेवा पूजा की पद्धति भी सुन्दरसाथ के घरों में सिर्फ आरती भोग तक सीमित रह गई। अगर समाज में चितवनी होती तो सुबह की सेवा पूजा में आया चरण श्री राज श्री ठकुरानी जी प्रथम भोम में विराजमान भये यह श्य भी दिखता और शाम की सेवा पूजा में आया चरण स्वरूप सुंदर सनकूल सकोमल, रूह देख नैना खोल नुरजमाल। यह श्य भी जेहन में उतर जाता।

जिस एक महीने में बीतक अवतरित हुआ बस उसी एक महीने बीतक करने की जड़ता लेकर फिरने वाला यह समाज चितवनी को अपने स्थानों में शुरू करने के महत्व को कैसे समझ सकता है? कर्मकाण्ड में डूबे हुए सुन्दरसाथ इतने अंधे कैसे हो चुके है कि वह चितवनी की गहन साधना की प्रक्रिया हमें नजर नहीं आती।

वाणी या बीतक की एक भी चोपाई में पूजा करना नहीं लिखा, एक भी चोपाई में पाठ करना

नहीं लिखा ,पर रास से लेकर क्यामतनामा तक और बीतक में हर जगह कहीं न कहीं प्रेममयी चितवनी का जिक्र जरूर है। इस समाज का इतिहास उठाकर सुन्दरसाथ अवश्य देखे, यह दावे के साथ कह रहा हूँ कि इस समाज को सही राह सही नेतृत्व अगर किसी ने दिया है तो वह चितवनी में अपने आपको डूबोने वालो ने ही दिया है। ईल्म से चतुराई करना कोई बड़ी बात नहीं हैं पर शेर वाला काम मर्दो की जमात वाला काम तो धनी के दिल मे डूबकर गोते लगाना यह है और यह किसी पाठ, पूजा, पद, या परिक्रमा से नहीं सिर्फ और सिर्फ चितवनी से ही होगा।

रूह नैनो दीदार कर,
रूह जुबां हक सो बोल।
रूह कानो हक बाते सुन,
एहि पट रूह का खोल।।

सिनगार २५/६८

हक अंग तो मुतलक मारत,
पर भूखन लगे जो भाल।
चितवन जुगल किशोर की,
देत कदम नूरजमाल।।

सिनगार ४/५४

(यह मेरे व्यक्तिगत विचार हैं। यह लेख किसी व्यक्ति, संस्था की सहमति या असहमति की अपेक्षा नहीं करता।)

प्रेम मार्ग

धनी के त्रिगुणातीत प्रेम की प्राप्ति का मार्ग बहुत ही कठिन है और रज व तम के भयावह मार्गों से होकर गुजरता है। यह आत्मा की गहराईयों में होता है, जिसमें अन्तर्मुखी होकर एकमात्र प्रियतम की चाहना होती है। इस मार्ग पर ज्ञान, कर्म तथा उपासना के शूरवीर भी पूर्ण रूप से नहीं चल पाते। इसे तलवार की धार के समान तेज कहा गया है। किन्तु यदि हमने पूर्ण एवं सर्वस्व समर्पण का मार्ग अपना लिया और संसार से अपनी दृष्टि हटाकर एकमात्र प्रियतम पर केन्द्रित कर ली तो हमें कष्टों से भय नहीं लगेगा क्योंकि भय की उत्पति अहंकार से होती है। धनी के प्रेम में जब सारा अहंकार समाप्त हो जाता है तो शरीर और संसार का भी अस्तित्व नहीं रह जाता। ऐसी स्थिती में सुख और दुःख से परे आनन्दमयी अवस्था प्राप्त हो जाती है।

इसके विपरीत कर्मकाण्ड का मार्ग बर्हिमुखी होता है जिसमें शरीर की बाह्य इन्द्रियां ही भाग लेती है, इसलिये इसे सीधा तथा चौड़ा कहा गया है।

प्रस्तुति : **नैन्सी**

गुरु पूर्णिमा

आचार्य सुभाष, श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा

सतगुरु सोई मिले जब सांचा,
तब सिंध बिंद परचावे।
प्रगट प्रकास करे पार ब्रह्म सों,
तब बिंद अनेक उड़ावे।। किरंतन 2/9

आषाढ़ मास की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा कहते हैं। गुरु पूर्णिमा वर्षा ऋतु के आरम्भ में आती है। इस दिन से चार महीने तक परिव्राजक साधु–सन्त एक ही स्थान पर रहकर ज्ञान की गंगा बहाते हैं। ये चार महीने मौसम की ष्टि से भी सर्वश्रेष्ठ होते हैं। न अधिक गर्मी और न अधिक सर्दी। इसलिए अध्ययन के लिए उपयुक्त माने गए हैं।

जैसे सूर्य के ताप से तप्त भूमि को वर्षा से शीतलता एवं फसल पैदा करने की शक्ति मिलती है, वैसे ही गुरु–चरणों में उपस्थित साधकों को ज्ञान, शान्ति, भक्ति और योग शक्ति प्राप्त करने की शक्ति मिलती है।

भारतीय संसति में गुरु पूर्णिमा का विशेष महत्व है, यह अध्यात्म–जगत की सबसे बड़ी घटना के रूप में जाना जाता है। पश्चिमी देशों में गुरु का कोई महत्व नहीं है, वहां विज्ञान और विज्ञापन का महत्व है परन्तु भारत में सदियों से गुरु का महत्व रहा है। यहां की माटी एवं जनजीवन में गुरु को ईश्वरतुल्य माना गया है, क्योंकि गुरु न हो तो ईश्वर तक पहुंचने का मार्ग कौन दिखायेगा?गुरु ही शिष्य का मार्गदर्शन करते हैं और वे ही जीवन को ऊर्जामय बनाते हैं।

जीवन विकास के लिए भारतीय संसति में गुरु की महत्वपूर्ण भूमिका मानी गई है। गुरु की सन्निधि, प्रवचन, आशीर्वाद और अनुग्रह जिसे भी भाग्य से मिल जाए उसका तो जीवन तार्थता से भर उठता है। क्योंकि गुरु बिना न आत्म–दर्शन होता और न परमात्म–दर्शन। इन्हीं की प्रेरणा से आत्मा चौतन्यमय बनती है।

गुरु भवसागर पार पाने में नाविक का दायित्व निभाते हैं। वे हितचिंतक, मार्गदर्शक, विकास प्रेरक एवं विघ्नविनाशक होते हैं। उनका जीवन शिष्य के लिये आदर्श बनता है। उनकी सीख जीवन का उद्देश्य बनती है। अनुभवी आचार्यों ने भी गुरु की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए लिखा है– गुरु यानी वह अर्हता जो अंधकार में दीप, समुद्र में द्वीप, मरुस्थल में वृक्ष और हिमखण्डों के बीच अग्नि की उपमा को सार्थकता प्रदान कर सके।

आषाढ़ की समाप्ति और श्रावण के आरंभ की संधि को आषाढ़ी पूर्णिमा, व्यास पूर्णिमा अथवा गुरु पूर्णिमा कहते हैं। गुरु पूर्णिमा आत्म–बोध की प्रेरणा का शुभ त्योहार है। यह त्योहार गुरु–शिष्य के आत्मीय संबंधों को सचेतन व्याख्या देता है। काव्यात्मक भाषा में कहा गया है– गुरु पूर्णिमा के चांद जैसा और शिष्य आषाढ़ी बादल जैसा। गुरु के पास चांद की तरह जीए गये अनुभवों का अक्षय

कोष होता है। इसीलिये इस दिन गुरु की पूजा की जाती है इसलिए इसे 'गुरु पूजा दिवस' भी कहा जाता है।

प्राचीन काल में विद्यार्थियों से शुल्क नहीं वसूला जाता था अतः वे साल में एक दिन गुरु की पूजा करके अपने सामर्थ के अनुसार उन्हें दक्षिणा देते थे। महाभारत काल से पहले यह प्रथा प्रचलित थी लेकिन धीरे–धीरे गुरु–शिष्य संबंधों में बदलाव आ गया। कहा गया है कि अगर आप गुरु की ओर एक कदम बढ़ाते हैं तो गुरु आपकी ओर सौ कदम बढ़ाते हैं। कदम आपको ही उठाना होगा, क्यों यह कदम आपके जीवन को पूर्णता प्रदत्त करता है।

महामत कहे गुर सोई कीजे,
जो अलख की देवे लख।
इन उलटीसे उलटाए के,
पिया प्रेमें करें सनमुख।। किरंतन 4/13

भारतीय संसति में गुरु का बहुत ऊंचा और आदर का स्थान है। माता–पिता के समान गुरु का भी बहुत आदर रहा है और वे शुरू से ही पूज्य समझे जाते रहे है। 'आचार्य देवोभवः' का स्पष्ट अनुदेश भारत की पुनीत परंपरा है और वेद आदि ग्रंथों का अनुपम आदेश है। परमात्मा की ओर संकेत करने वाले गुरु ही होते हैं। गुरु एक तरह का बांध है जो परमात्मा और संसार के बीच और शिष्य और भगवान के बीच सेतु का काम करते हैं। इन गुरुओं की छत्रछाया में से निकलने वाले कपिल, कणाद, गौतम, पाणिनी आदि अपने विद्या वैभव के लिए आज भी संसार में प्रसिद्ध है।

गुरुओं के शांत पवित्र आश्रम में बैठकर अध्ययन करने वाले शिष्यों की बुद्धि भी तद्नुकूल उज्ज्वल और उदात्त हुआ करती थी। सादा जीवन, उच्च विचार गुरुजनों का मूल मंत्र था। तप और त्याग ही उनका पवित्र ध्येय था। लोकहित के लिए अपने जीवन का बलिदान कर देना और शिक्षा ही उनका जीवन आदर्श हुआ करता था।

प्राचीन काल में गुरु ही शिष्य को सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों तरह का ज्ञान देते थे लेकिन आज वक्त बदल गया है। आजकल विद्यार्थियों को व्यावहारिक शिक्षा देने वाले शिक्षक को और लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान देने वाले को गुरु कहा जाता है। शिक्षक कई हो सकते है लेकिन गुरु एक ही होते है।

हमारे धर्मग्रंथों में गुरु शब्द की व्याख्या करते हुए लिखा गया है कि जो शिष्य के कानों में ज्ञान रूपी अमृत का सींचन करे और धर्म का रहस्योद्घाटन करे, वही गुरु है। यह जरूरी नहीं है कि हम किसी व्यक्ति को ही अपना गुरु बनाएं।

माता–पिता केवल हमारे शरीर की उत्पत्ति के कारण है लेकिन हमारे जीवन को सुसंस्त करके उसे सर्वांग सुंदर बनाने का कार्य गुरु या आचार्य का ही है।

पहले गुरु उसे कहते थे जो विद्यार्थी को विद्या और अविद्या अर्थात आत्मज्ञान और सांसारिक ज्ञान दोनों का बोध कराते थे लेकिन बाद में आत्मज्ञान के लिए गुरु और सांसारिक ज्ञान के लिए आचार्य–ये दो पद अलग–अलग हो गए। भारत के महान् दार्शनिक ने जब यह कहा कि हमारी शिक्षण संस्थाएं अविद्या का प्रचार कर रही हैं तो लोगों ने आपत्ति की लेकिन वे बात सही कह रहे थे।

आज हमारे विद्यालयों में ज्ञान का नहीं बल्कि सूचनाओं का हस्तांतरण हो रहा है। विद्यार्थियों का ज्ञान से अब कोई वास्ता नहीं रहा इसलिए आज हमारे पास डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, न्यायाधीश, वैज्ञानिक और वास्तुकारों की तो एक बड़ी भीड़ जमा है लेकिन ज्ञान के अभाव में चरित्र और चरित्र के बिना सुंदर समाज की कल्पना दिवास्वप्न बन कर रह गई है।

मनुष्य के जीवन में कितने ही उच्च से उच्च पद में हो,बडे से बडे डिग्रियां क्यों न हो,फिर भी आत्म कल्याण एवं मार्गदर्शन हेतु उसको अपने जीवनकाल में एक शरीरधारी गुरु के प्रति समर्पित तो होना ही पडेगा।इसके बिना मनुष्य कभी भी उचाईयों को प्राप्त नहीं कर सकता।नाहीं मनुष्य जीवन को सफल कर सकता है।

शिक्षा का संबंध यदि चरित्र के साथ न रहा तो उसका परिणाम यही होगा। परंतु इस मूल प्रश्न की ओर कौन ध्यान दे?सत्ताधारी लोग अपने पद को बनाये रखने के लिए शिक्षा का संबंध चरित्र की बजाय रोजगार से जोड़ना चाहते हैं।

जो लोग शिक्षा का संबंध रोजगार से जोड़ने की वकालत करते हैं वे वस्तुतः शताब्दियों तक अपने लिए राज करने की भूमिका तैयार कर रहे हैं और उनके तर्क इतने आकट्य हैं कि सामान्य व्यक्ति को महसूस होता है कि समाज के सबसे अधिक हितचिंतक यही लोग हैं।

यही कारण है कि देश में आज जिस तरह का माहौल बनता जा रहा है, अनैतिकता और अराजकता फैलती जा रही है, हिंसा और आतंक बढ़ता जा रहा है, भ्रष्टाचार और अपराध जीवनशैली बन गयी है। इसका मूल कारण गुरु को नकारकर, चरित्र को नकारकर हमने केवल भौतिकता को जीवन का आधार बना लिया है।

एक बात हमेशा याद रखें – जिससे आप शिक्षा ग्रहण करते है भूलकर भी उसका अपमान ना करें।उनके द्वारा निर्देशित छोटे से छोटे कार्य को करने में कभी भी संकोच ना करें। आज्ञापालन ही सफलता की कुंजी है।

पिछले सात दशक से हम उल्टी गिनती गिन रहे हैं। उसी का परिणाम है कि न पानी की समस्या सुलझी न रोजी–रोटी की। न उन्नत चिकित्सा सुलभ हो पा रही है न शिक्षा को उन्नत बना पाये है। चंद लोगों की भव्य अट्टालिकाएं अवश्य खड़ी हो गई हैं।

यदि हमें भारत में लोकतांत्रिक पद्धति को सफल बनाना है तो चरित्र उसकी पहली शर्त है। महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि हम हिंदुस्तान में कौन–सी पद्धति लागू करें बल्कि महत्वपूर्ण यह है कि हम चरित्रवान व्यक्ति पैदा करें।

शास्त्रों में गु का अर्थ बताया गया है– अंधकार या मूल अज्ञान और रु का का अर्थ किया गया है– उसका निरोधक। गुरु को गुरु इसलिए कहा जाता है कि वह अज्ञान तिमिर का ज्ञानांजन–शलाका से निवारण कर देता है। अर्थात अंधकार को हटाकर प्रकाश की ओर ले जाने वाले को श्गुरुश कहा जाता है।

अज्ञान तिमिरांधश्च ज्ञानांजन
शलाकया,चक्षुन्मीलितम तस्मै श्री गुरुवै नमः

पाठ्य पुस्तकों में कुछ नीतिपरक श्लोकों को जोड़ने अथवा बच्चों को तोते की तरह गायत्री मंत्र रटाने से न तो चरित्र निर्माण होता है और न भावी पीढ़ी में ज्ञान का हस्तांतरण ही संभव है। ज्ञान तो गुरु से ही प्राप्त हो सकता है लेकिन गुरु मिलें कहां?अब तो ट्यूटर हैं, टीचर हैं, प्रोफेसर हैं पर गुरु नदारद हैं। गुरु के प्रति अविचल आस्था ही वह द्वार है जिससे ज्ञान का हस्तांतरण संभव है।

हमें इन तथ्यों पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। यह सच है कि आज हम जिस सामाजिक और आर्थिक परिवेश में सांस ले रहे हैं वहां इन पुरानी व्यवस्थाओं की चर्चा निरर्थक है परंतु इनके सार्थक और शाश्वत अंशों को तो हम ग्रहण कर ही सकते हैं।

सिर्फ धन कमाने या रोजी–रोटी चला लेने से मनुष्य जीवन में सुखी नहीं रह सकता। यह सुखी रहने का बाहरी भौतिक उपाय है। अपनी

आत्मा को जानना और भगवान को पाना ही सच्चा सुख है।

यद्यपि गुरुओं के महागुरु परमात्मा स्वयं प्रत्येक व्यक्ति के हृदय–गुहा में विराजमान हैं तथापि बिना किसी बाहर के योग्य गुरु की मदद के हम अपनी आत्मा को नहीं जान सकते।

यह आध्यात्मिक गुरु ही अन्तरात्मा के बंद द्वार खोलता है और हमें परमात्मा से साक्षात्कार कराता है। माँ का ज्ञान और शिक्षक द्वारा दिया गया ज्ञान बाहर का ज्ञान है, वस्तुओं का ज्ञान है परन्तु आध्यात्मिक गुरु द्वारा दिया गया ज्ञान आंतरिक ज्ञान है।

वह भीतर के अंधकार को दूर कर उसे प्रकाशित करता है। बाहर की वस्तुओं का कितना भी हमें ज्ञान प्राप्त हो जाए हम कितने भी बड़े पद पर हों, कितना भी हमारे पास पैसा हो परन्तु बिना भीतर के ज्ञान सब कुछ व्यर्थ है।

बाहरी ज्ञान, मन–बुद्धि का ज्ञान–विज्ञान है परन्तु आध्यात्मिक ज्ञान मन से परे भगवान का ज्ञान है। परन्तु विडम्बना यह है कि जिस प्रकार गुरु रूपी माँ की महिमा और सम्मान में गिरावट आई है, रोजगार दिलाने वाले शिक्षकों का अवमूल्यन हुआ है।

उसी प्रकार भगवान से मिलाने वाले आध्यात्मिक गुरुओं का भी अवमूल्यन हो रहा है। आज नकली, धूर्त, ढोंगी, पाखंडी, साधु–संन्यासियों और गुरुओं की बाढ़ ने असली गुरु की महिमा को घटा दिया है। असली गुरु की पहचान करना बहुत कठिन हो गया है।

परमात्मा से मिलाने के नाम पर, मोक्ष और मुक्ति दिलाने के नाम पर, कुण्डलिनी जागृति के नाम पर, पाप और दुःख काटने के नाम पर, रोग–व्याधियां दूर करने के नाम पर और जीवन में सुख और सफलता दिलाने के नाम पर हजारों धोखेबाज गुरु पैदा हो गये हैं जिनको वास्तव में कोई आध्यात्मिक उपलब्धि नहीं है।

सद्गुरु की पा से ईश्वर का साक्षात्कार भी संभव है। गुरु की पा के अभाव में कुछ भी संभव नहीं है।

सतगुरु सोई जो आप चिन्हावे,
माया धनी और घर।
सब चीन्ह परे आखिर की,
ज्यो भूलिए नहीं अवसर।। किरंतन 14/11

जो स्वयं आत्मा को नहीं जानते वे दूसरों को आत्मा पाने का गुर बताते हैं। तरह–तरह के प्रलोभन देकर धन कमाने के लिए शिष्यों की संख्या बढ़ाते हैं। जिसके बाड़े में जितने अधिक शिष्य हों वह उतना ही बड़ा और सिद्ध गुरु कहलाता है।

मूर्ख भोली–भाली जनता इनके पीछे–पीछे भागती है और दान–दक्षिणा देती है। ऐसे धन–लोलुप अज्ञानी और पाखंडी गुरुओं से हमें सदा सावधान रहना चाहिए।

कहावत है कि 'पानी पीजै छान के और गुरु कीजै जान के।' सच्चा गुरु ही भगवान तुल्य है। इसीलिए कहा गया है कि 'गुरु–गोविंद दोऊ खड़े काके लागूं पांय, बलिहारी गुरु आपनो जिन गोविंद दियो मिलाय।' यानी भगवान से भी अधिक महत्व गुरु को दिया गया है। यदि गुरु रास्ता न बताये तो हम भगवान तक नहीं पहुंच सकते। अतः सच्चा गुरु मिलने पर उनके चरणों में सब कुछ न्यौछावर कर दीजिये।

उनके उपदेशों को अक्षरशः मानिये और जीवन में उतारिये। सभी मनुष्य अपने भीतर बैठे इस परम गुरु को जगायें। यही गुरु–पूर्णिमा की सार्थकता है तथा इसी के साथ अपने गुरु, आचार्य का भी सम्मान करें।

धर्म और मोक्ष

विनोद प्रसाद तिम्सिना

सृष्टी का शुरु से ही मानव, धर्म का विविध प्रयास करते आ रहे हैं । पुराणों मे विभिन्न महापुरुषों का कर्म और उपायना की बड़ी–बड़ी गाथायों का जिक्र किया हुआ है। चक्रवर्ति सम्राटों के द्वारा स्वर्ग के इन्द्र आसन के लिए किया हुआ अश्वमेघ यज्ञका कर्म और ऋशि मुनियों, राजाओं और दानवों के द्वारा किया गया किसी मुक अमुक वरदान प्राप्ति के लिए हजारों सालों की उपासना का जिक्र इसका पौराणिक प्रमाण है।

आज कल हम सब के सामने कि बात है, हजारों, लाखों मन्दिरों में भगवान के स्वरुप, चित्र व अन्य मूर्ति को रखके दुनिया वालों को धर्म और मोक्षका राह दिखाने का प्रयास करते आ रहे हैं। लेकिन वह सब धर्म और मोक्ष के लिए प्रयाप्त साबित नहीं हुए। क्योंकि वह सब एक स्वप्न की दुनिया की भुलभुलैया खेल मात्र है। फिर ए पुरी दुनिया एक खेल है इसका ज्ञान किसी को नहीं था। और लोग इन्द्र, सुर्य, ब्रह्मा, बिष्णु आदि को ही परमात्मा मानकर पत्थर के मुर्तियों पर माथा टेक रहे थे और अब भी हैं।

जब बि. स. 1638 आश्विन महीना का शुक्ल पक्ष चतुर्दशी की रात सिन्ध के एक गाँव उमरकोट के श्री मतुमेहता व कुंवरबाई के बिलक्षण पुत्र के रुप में श्री देवचन्द्र जी प्रकट हुए। और ग्यारह बर्ष की अवस्था में श्री देवचन्द्र जी को आत्म साक्षात्कार की ढ भावना जाग्रत हो उठी, और मन में निम्न ५ सवाल पैदा हुवा। 1. मैं कौन हूँ? 2. यहाँ पर किस लिए आया हुँ? 3. यहाँ पर कहाँ से आया हुँ?4. परमात्मा कौन है? 5. वह किस प्रकार मिलेंगे?

इस दृढ़ भावना नें उनको परमात्मा की खोज के लिए घर छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। कच्छ से लेकर जामनगर (तव नवानगर) तक, हिन्दुस्तान के बहुत सारे धार्मिक क्षेत्र में पहुच के विभिन्न मठाधिस, महन्त व सम्प्रदाय वालों के यहाँ छानमारा। लेकिन कोई उनका जिज्ञासा शान्त नहीं कर पाए। परमात्मा प्राप्त की राह नहीं दिखा पाए। लेकिन परिस्थितियां गन्तव्य की और उनका मार्गदर्शन करती रही। और श्री देवचन्द्र जी, श्री हरिदास जी के यहाँ होते हुए नवानगर के श्री श्याम जी मन्दिर जहां कान्ह जी भट्ट श्री मद्भागवत के अनवरत कथा किया करते थें वहां पहुच गए। वहां १४ बर्ष का अनवरत श्री मद्भागवत श्रवण करके चितवनी करने पर श्री देवचन्द्र जी को श्री अनादि अक्षरातीत परमात्मा (श्री प्राणनाथ जी) सम्पूर्ण बिधि व वतन के साथ साक्षात्कार हुए। तब श्री देवचन्द्र जी को अपने सम्पूर्ण जिज्ञासा समाप्त हो कर मोक्ष कि प्रष्ट राह व गन्तव्य मालूम हुआ।

तब से दुनियां को धर्म और मोक्ष का यथार्थ

गन्तव्य प्राप्त हुआ है। इस के बाद श्री देवचन्द्र जी श्री प्राणनाथ जी के आदेश मूताबिक लोगों को ब्रह्मसृष्टि को ब्रह्म ज्ञान देना शुरु किया। परमात्मा श्री प्राणनाथ जी स्वयं ब्रह्मसृष्टीयों को श्री देवचन्द्र जी के द्वारा बताए जा रहें ब्रह्मज्ञान सुनकर परमधाम में जागृत होने के लिए आन्तरिक रुप से प्रेरित करते। इस तरह ३१३ ब्रह्मसृष्टी जागृत हुए। उन जागृत होने वालों में से एक थे श्री मेहेराज जी। श्री देवचन्द्र जी के बाद श्री मेहेराज जी ने इस अखण्ड जाग्रत ज्ञान को दुनियां में फैलाने का दायित्व लिया। और दायित्व को अत्यन्त सफलता पूर्वक सम्पन्न भी किए। श्री मेहेराज जी के सफलता की वजह से ही आज आप और हम लोग इस ब्रह्मज्ञान के सागर का निजानन्द में सामिल हो कर धर्म और मोक्ष का लाभ लेने का प्रयास कर रहें हैं।

अब हमारा दायित्व है कि हम इस ब्रह्मज्ञान के अंधेरे रहे बहुत से लोगों में और ज्ञान का शुत्र प्राप्त करने के बाद भी कर्मकाण्ड में माथा पिटने वालों को मोक्ष का सही मार्ग पकड़वाने में सहयोग करें।

***

यमुना जी की शोभा

श्री यमुना जी की दोनों ओर, लगी दुई हार ।
आधो आध हुइयाँ डारी, शोभा है अपार ।।
जल चबूतरा जल की शोभा लेहेरें चले हैं।
ढँपी खुली घड़नालों से खुस बोए मिले है ।।
दूध जैसा उजला मीठा, हीरा जैसा स्वेत ।
ना भी प्रमाण गहराई, अति शोभा देत ।।
पाँच मोहोल चार चबूतरा, दोनो ओर आए ।
केल पुल पाट घाट बटे पुल शोभा ए ।।
पचीस हैं देहुरियां, इशान कोण पास ।
एक सौ अस्सी देहुरियां, अग्नि कोण पास ।।
जल रौंस बारे देहुरियां, पाल पुखराज रौंस ।
दुई हारें चार हारें पाँच हारें वृक्ष ।।
मूल कुण्ड से प्रकट भई, यमुना जी का पानी ।
होज कोसर ताल में पहुँची, सीढ़ियां लेहेरानी ।।
केल पुल पाट घाट बट पुल में खेलो ।
कुन्ज निकुन्ज बन की रामत में मिलो ।।
बट पीपल चौकी, ताड़बन बड़ा बन ।
मधुबन महाबन श्री यमुना जी की वन ।।

इन्द्र दाहाल (नेपाल)

लोगों का अंधविश्वास

गीता ठाकुर

सांसारिक लोगों की सामान्य मनोवृत्तियों और अपेक्षाओं को जानते हुए कई लोगों ने अंधविश्वास की बड़ी–बड़ी दुकानों को रच दिया। हालत तो ये हो गई कि ईश्वर उपासना के महत्व से ही हम बहुत दूर निकल आए।

ईश्वर है और सिर्फ वहीं है। मैं अनंत चौतन्य ईश्वर का ही अंश हूं। समस्त सृष्टि का जन्म दाता वही है। ये आस्था है। ईश्वर है और वो मेरी क्षूद्र भौतिक मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए देवस्थानों या मूर्तियों, पेड़ों, नदी–नालों आदि इत्यादि में वास करता है ये अंधविश्वास है। ईश्वर के इस असत स्वरूप को सत्य मानने वाले ईश्वर प्राप्ति से बहुत दूर हो जाते हैं। सांसारिक लोगों कि सामान्य मनोवृत्तियों और अपेक्षाओं को जानते हुए कई लोगों ने अंधविश्वास की बड़ी–बड़ी दुकानों को रच दिया। हालत तो ये हो गई कि ईश्वर उपासना के महत्व से ही हम बहुत दूर निकल आए।

हर पल प्रति सुंदर रचनाएं करती रहती है और मनुष्य भी अपनी सुविधा के लिए नित नए अविष्कार करता चला जा रहा है। इन दोनों के बीच एक झूठ भी पलता रहता है और वो ये कि मनुष्य की समझ से परे कई परलौकिक बातें भी हैं। इन्हीं के किस्से कहानियां बनाकर लोगों की समस्याओं को दूर करने उनकी मनोकामनाओं को पूरा करने की ठगविद्या शुरू हो जाती है। आज हम मंगल पर यान भेज रहे हैं, लेकिन मांगलिक दोष से हमारा पीछा नहीं छूट रहा। हम मंगल पर जा सकते हैं ये आस्था और विश्वास है और बिना जाने मंगल हम पर कोई असर करता है ये अंधविश्वास है। ऐसे ही जाने कितने मन्नतों के धागे, नारियल आप बांधते और तोड़ते रहे हैं।

भजन कीर्तन पूजा पाठ ईश्वर के गुणगान करने के तरीके हैं और उस परमशक्ति का जितना गुणगान किया जाए उतना कम है, लेकिन अगर इस सबके मूल में घर, गाड़ी, पदोन्नति आदि की चाह है तो ये न पूजा है न ही भजन। स्वार्थ सिद्धि को उपासना मानना बड़ी मूर्खता है। अपने से बड़ों को हमने जो कुछ करते देखा है आंख मूंदकर वही सब करते रहना कोई समझदारी नहीं है। हर मानव मात्र को विवेक का प्रकाश मिला है जो बातें हमारे ज्ञान से सिद्ध हैं उन्हें हमें स्वीकार करना चाहिए, लेकिन जिन बातों का कोई तुक नहीं दिखाई देता उनका पल्ला पकड़ के रखना घोर अंधविश्वास है।

अंधविश्वास इतने गहरे घर कर गया है कि आज कई लोग धर्मांध होकर अपनी विचारशीलता और विवेक को ही खो बैठे हैं। कोई इन बातों पर लोगों को सत्य का प्रकाश देने की कोशिश करे तो उसका ही विरोध शुरू हो जाता है। वेदों पुराणों के नाम पर बहुत से लोगों ने बहुत ही भ्रामक स्थितियां पैदा कर दी हैं। ये वे लोग है जिन्होंने वेद पुराण का

अध्ययन भी नहीं किया है हां जब भी कोई प्रश्न पैदा हो तो उस पर वेदों में ऐसा लिखा है कहकर अपने दायित्व की इतिश्री कर लेते हैं। कई बच्चों को मैंने मंदिरों में धागे बांधते देखा है। पूछा ऐसा क्यूं करते हो?तो कहते हैं परीक्षा में पास होने के लिए। हास्यापद नहीं लगता ये? अगर नहीं लगता तो आप भी अज्ञान की पट्टी हटाएं और अपने ज्ञान के प्रकाश में सत्य को जानने का प्रयास करे।

आप मनुष्य हैं जिसके पास तर्कशक्ति है, आज बड़े–बड़े पुल, इमारतें, सड़के, हवाई जहाज, सैटेलाइट आदि जैसी मानव की जिन रचनाओं को आप देखते हैं उसके पीछे यही तर्क शक्ति है। ऐसा है तो क्यूं है?ऐसा कैसे हो सकता है?जैसे कई सामान्य सवाल हमारी शंकाओं का निदान करते हैं, लेकिन हम ईश्वर के मामले में पूरी तरह रूढ़िवादी बने रहते हैं। इसकी वजह है ईश्वर को स्वयं खोजने के बजाए दूसरे के बताए गलत रास्तों पर भटक जाना। देखिए रास्ता बताने वाले सही लोग भी हैं गलत भी पर आपकी विवेकशीलता आपको गलत और सही का फर्क बताती है। अपने विवेक को जागृत रखने के लिए उस पर चढ़ी अज्ञान की मोटी चादर को उतार फेंकने की जरूरत है। अज्ञान है बिना जांचे परखे किसी भी मान्यता के साथ चल पड़ना।

स्वामी विवेकानंद युवाओं से हमेशा ये आह्वान करते रहे कि जब तक स्वयं जांच परख न लो दुनिया की किसी मान्यता पर विश्वास न करो। हम किसी को अगरबत्ती लगाते देखते हैं तो वैसा ही करने लगते हैं। ईश्वर के जिस रूप को पूजते देखते हैं उसी में आस्था करने लगते हैं। किस्से कहानियां सुन–सुनकर अपनी आस्थाएं बना लेते हैं। एक समय ऐसा आता है जब हम इन देख–देखकर सीखी हुई बातों को इतना गहरे बैठा लेते हैं कि इन्हें अपने विवेक से सिद्ध मानने लगते हैं। खुद विरोध करना तो छोड़िए किसी और के विरोध को भी नास्तिकता मानने लगते हैं। नास्तिक वो नहीं जो सदग्रंथों को पढ़कर सामान्य पुस्तकों के साथ रख देते है नास्तिक वे हैं जो सद्ग्रंथों को कपड़ों में लपेट कर मंदिर में रख देते हैं रोज उन्हें प्रणाम करते हैं, लेकिन कभी उनके संदेशों को समझने का प्रयास नहीं करते।

आवश्यक सूचना

सुन्दरसाथ के चरणों में विनम्र प्रार्थना है कि जो भी सुन्दरसाथ लिखने में कुशल,योग्य है। जो अपना भाव तारतम वाणी और शास्त्रों के माध्यम से दूसरों तक पहुंचाना चाहते हैं ऐसे सुन्दरसाथ अपना लेख ईमेल (E-mail) या वटसप (watsapp) के माध्यम से ज्ञानपीठ में भेजें। लेख भेजने की अन्तिम तीथि प्रत्येक महिने की 1 तारिख तक रहेगी। समय पर भेजे गये लेखों को ही उस महिने की पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।अन्यथा आगे आनेवाली महिनों में प्रकाशित की जायेगी।

लेख भेजने का नियम–
1–शुद्ध टाईप होनी चाहिए।
2–हस्तलिखित शुद्ध एवं स्पष्ट होना चाहिए।
3–टाईप किया गया लेख हो तो ओरजिनल कांपी होनी चाहिए।
4–डाक से ज्ञानपीठ के पते भर भेज सकते हैं।
5–हस्तलिखित लेख को PDF बनाकर ही भेजें, ताकि पढने में और टाईपिंग में असुविधा न हो।

तारतम मंजरी मासिक पत्रिका "लेख" प्रेषित हेतु एवं अन्य कोई भी असुविधा के लियें निम्नलिखित EMAIL और दूरभाष नम्बरों पर सम्पर्क करें।

tartammanjari@gmail.com

+9193141 93262 (जूनेजा बाबूजी)
+919725389547 (आचार्य सुभाष जी)

देह विकार

सुन्दरसाथ जी ! इस मानव शरीर को मुक्ति का द्वार कहा जाता है। यह किसी वरदान से कम नही है। इस संसार मे जीवधारी शरीर अनगिनत है, किन्तु मानव शरीर को ही देव दुर्लभ कहा गया है। अनेक योनियों मे भटकने वाले जीव को जब मानव योनि प्राप्त होता है तो वह बहुत बडा भाग्यशाली कहलाता है। क्योकि जन्म मरण के चक्कर से छुटकारा पाने हेतु मानव शरीर के रूप मे उसे एक स्वर्णीम अवसर प्राप्त हुआ है।

जो व्यक्ति मायावी सुख चाहनाओ को छोडकर अपने मनुष्य तन को परब्रम्ह के भक्ति मार्ग मे लगाया, ध्यान साधना मे लगाया उसका मानव जीवन धन्य धन्य हो गया। किन्तु जो व्यक्ति अपने शरीर के मोहपाश मे ही बधां रहा, शरीर के सुख चाहनाओ मे ही हमेशा लगा रहा, उन्होने अपने पांव मे स्वयं कुल्हाडी मार ली। ऐसे व्यक्ति के लिये यह मानव शरीर भी किसी अभिषाप से कम नही।

मनुष्य अपने शारीरिक आशक्ति के कारण ही मायावी जंजालो मे फंसा रहता है। उसे अपने शरीर के चाहनाओ की पूर्ति मे ही स्वाद आता है। विषयों के स्वाद मे पडा हुआ मनुष्य सदैव इन्द्रियों के अधीन रहते है ऐसे व्यक्ति को शरीर के प्रति अत्याधिक आसक्ति होती है। शरीर के प्रति आशक्ति होने से उसे आत्मज्ञन प्राप्त नही होता है, जिसके कारण वह सदैव जन्म मरण के दुख की ज्वाला मे जलते रहता है। शारीरिक सुखो के प्रति आकर्षण पहले तो सुखद लगता है, किन्तु बाद मे वह अति कष्टदायी होता है इसलिये वाणी मे कहा गया है कि शरीर के प्रति आसक्ति उस भयानक रात्रि की तरह है जो जीव के लिये मृत्यु का जाल तैयार करती है। पहले तो यह मायावी सुख की शीतल अनुभूति कराती है, किन्तु बाद मे दुखो की ज्वाला मे जलाती है।

ए अंधेरी है विकट, जाहेर रची जम जाल।
ए पहले देखावे सुख शीतल, पीछे जाले अगिन की झाल।। कि.33/18

अज्ञानता के घोर अंधकूप मे डूबे रहने वाले व्यक्ति के लिये ऐसी विकट स्थिति का होना स्वाभाविक है परंतु जो ज्ञानवान है वह भी शरीर के विषय विकारो से अछूते नही है। काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकारादि के जंजाल मे फंस कर बडे बडे ऋषी मुनि भी अपने भक्ति की शक्ति खो दिये है। इसका मुख्य कारण है हृदय मे प्रियतम अक्षरातीत के प्रति अटूट निष्ठा, प्रेम व वैराग्य का ना होना। मात्र शुष्कज्ञान के द्वारा अध्यात्म के पथ पर नही चला जा सकता।

देह विकार से हम सुन्दरसाथ भी अछूते नही है। हमने ब्रम्हवाणी अवश्य पाया है किन्तु ब्रम्हवाणी के कथनो को अंगिकार न कर पाने के कारण हम अपनी शारीरिक विकारो पर विजय पाने मे असमर्थ है। हम अपने परमधाम के अखण्ड सुखो को छोडकर मात्र शरीर और संसार के क्षणिक सुखो के पीछे भागते रहते है। सांसरिक सुख की चाहनाओ मे हमने स्वंय को अपने नाक तक डूबोय रहते है और कहते है कि हम परमधाम के ब्रम्हज्ञानी ब्रम्हसृष्टीयां है।

इस बात मे कोई शक नही है कि परमधाम के ब्रम्ह

ज्ञान के द्वारा ही परब्रम्ह को जाना जा सकताहै और उसे पाया जा सकता है। हम बडे भाग्यशाली है जो अक्षरातीत के कृपा से यह ब्रम्हज्ञान हमे मिला है। किंतु जो सुन्दरसाथ इस दिव्य ब्रम्हवाणी को आत्मसात नही करेगा, उससे बडा अभागी भी कोई नही होगा। यह शाश्वत सत्य है कि जब तक हम ब्रम्हवाणी के वचनों को अपने हृदय मे धारण नही करेंगे अर्थात अपने जीवन मे नही उतारेंगे, तब तक यह ब्रम्हवाणी हमारे लिये फलदायी सिद्ध नही होगी। क्योकि '' मकसूद तिनका होएसी, जो लेसी एक विचार''।। इसलिये सुन्दरसाथ जी श्रीमुख वाणी के वचनो को जब हम अपने आचरण मे उतारेंगे, तभी जाकर हमारी आत्मा इस झूठे नश्वर तक के बंधनो से मुक्त हो पायेगी, अन्यथा नही।

अब मै दिल विचारिया, लिया न सिर सब्द।
तो झूठी देह लग रही, जो बांधी माहें हद।।

ब्रम्हवाणी के बचनो को आत्मसात कर अध्यात्म के राह पर चलने वाले सच्चे सुन्दरसाथ का पीछा भी यह देह विकार नही छोडता। कभी काम के रूप मे, तो कभी क्रोध के रूप मे या कभी आलस्य के रूप मे यह देह विकार सदैव अपनी उपस्थिति दर्ज कराते रहता है। जब साधक अपने प्रियतम के प्राप्ति हेतु ध्यान मार्ग का अनुसरण करता है तब भी यह देह विकार उसका पीछा नही छोडता है। ध्यान मे बैठने पर बाहरी सोरगुल एवं मन चंचलता के द्वारा साधक के ध्यान मे बाधा पहुंचाकर यह देह विकार अपना अस्तित्व का भान कराते रहता है। एक साधक के लिये शरीर और संसार का आभाव, ध्यान मे बैठने पर भी होते रहना यह बहुत बडी बाधा है। क्योकि जब तक शरीर और संसार का आभाष होते रहेगा तब तक साधक को अपने प्रियतम अक्षरातीत का दीदार नही हो पायेगा। यह विकट अवस्था से निजात पाने के लिये ब्रम्हवाणी मे कहा गया है कि, '' पहले पी तू सरबत मौत का'' अर्थात हे सुन्दरसाथ जी ! आपको जीते जी ही संसार की तरफ से सर्वप्रथम मरना होगा। आपको अध्यात्म की उस अवस्था मे आना होगा, जिसमे ऐसा प्रतीत हो कि शरीर और संसार है ही नही। इस अवस्था की प्राप्ति के लिये पूरी दृढता से समपर्ण के साथ साथ प्रेम एवं ध्यान मे डूबना होगा। तभी जाकर शरीर और संसार के अस्तित्व का आभाष छूटेगा। प्रेममयी चितवनी के द्वारा धनी की शोभा जब हृदय मे बस जाती है तो धनी के जोश और इस्क भी अपना प्रभाव दिखाने लगती है। प्रियतम की शोभा मे डूबी हुई आत्मा के हृदय मे प्रियतम के प्रेम एवं आनंद की मस्ती छानेलगती है ऐसी प्रेममयी अवस्था मे ही शरीर और संसार का आभाष एवं आसक्ति समाप्त हो जाती है।

अब तो आतम ने ए दृढ किया,
देह उडे न बिना इस्क।
जोस इस्क दोउ मिले, तब उडे देह बेसक।।
कि. 85 / 411

अतएव सुन्दरसाथ जी! इस शरीर रूपी घर मे रहते हुये भी इसके मोह पाश से सर्वथा परे रहना चाहिये। अपना ध्यान सदैव इस पीण्ड ब्रम्हाण्ड से परे परमधाम मे लगाये रखना चाहिये। ध्यान की गहन अवस्था या ब्रम्हानन्द मे डूबे रहने की स्थिति मे आत्मा को अपने मूल तन परात्म का ही आभाष होता है और आत्मा अपने परात्म के प्रेम भाव मे ही डूबी रहती है। उस समय आत्मा को अपने पंचभौतिक तन या इस मायावी संसार की कोई बोध नही होता। इसे कहते है '' आतम भेली परआत्मा, सुपन भेलो संसार।।

यह प्रेममयी स्थिति प्राप्त होने के पश्चात चाहे रात्रि हो या दिन, किसी भी समय अपने प्राणवल्लभ अक्षरातीत से अलग होने का भाव नही होता। इस प्रकार ज लमे खिलने वाले कमल की भांति हम इस मोह जल मे रहते हुये भी इससे सर्वथा अलग ही रहेंगे तथा सपने के संसार मे स्वंय को सदा जागृत किये रहेंगे।

या विध मेला पिउ का,
पीछे न्यारे नही रैन दिन।
जल मे नहाईये कोरे रहिये,
जागिये माहे सुपन।। कि.34 / 28

धर्म की जड़ें ध्यान में

ज्योति, सरसावा

सच्चाई छुप नहीं सकती झूठे असूलों से ।
खुशबू आ नहीं सकती कागज के फूलों से ।।

प्यारे सुन्दरसाथ जी! आपने देखा होगा कि रंग बिरंगे वेश धारण किये, कण्ठ में माला, तिलक, सुन्दर पागं अथवा गोटे वाली टोपी धारण करने वाले तो अनेकों हैं पर ध्यान के बिना वे सभी कागज के रंग बिरंगे फूलों की तरह हैं जो सुन्दरता से सबको अपनी और आकर्षित तो कर सकते हैं लेकिन जिस तरह से कागज के फूलों में सुगन्ध नहीं होती उसी प्रकार उनमें जो अध्यात्म भाव की दिव्य गन्ध आनी चाहिए थी उसका अभाव होता है। इसी कारण से धर्म में जो तेजस्विता होनी चाहिए वह नहीं होती एक तरह से देखा जाए तो ध्यान के अभाव में धर्म असंभव है।

सत्यता तो यह है कि धर्म की जड़ें ही ध्यान में हैं तो सुन्दरसाथ जी सुन्दरबाई (श्री धनी देवचन्द्र जी) द्वारा लाये तारतम को ग्रहण कर सुन्दरसाथ का दावा करने वाले अर्थात् अपने आप को कि हम ब्रह्मसृष्टि हैं, पूर्ण ब्रह्म परमात्मा की ब्रह्मांगना है, यह दावा करने वाले अनेकों हैं, पर यदि वह ध्यान नहीं करते तो उनका जीवन समझो मात्र एक अभिनय के समान हो सकता है।

कुछ धर्म के मार्ग पर चरण बढ़ाने वाले अपनी इन्द्रियों का दमन भी करते हैं पर ये दोनो बाते ही हमारे लिए घातक सिद्ध हो सकती है। तप, ध्यान, साधना का मिथ्या अभिनय मात्र एक पाखण्ड अर्थात् मात्र दिखावा है बिना विवेक के इन्द्रियों का दमन करना और भी घातक सिद्ध हो सकता है ध्यान किये बिना विवेक आता ही नहीं इस प्रकार इन्द्रियों का दमन करने वाले को संघर्ष तो बहुत करना पड़ता है और उसे उपलब्धि भी कुछ नहीं होती क्योंकि जिसे दबाया जाता है वह समाप्त नहीं होता अपितु और अधिक गहराई में चला जाता हैं उदाहरणार्थ जैसे हम क्रोध को दबाते हैं तो वह दिन ज्वालामुखी बन जाता है। अर्थात् इन्द्रियों का दमन नहीं शमन करना है। इन्द्रियों के विषय सामने हों पर फिर भी उसमें हम लिप्त न हों यह विवेक ध्यान द्वारा ही आता है। तभी यह सम्भव हो सकेगा।

ध्यान न करने वाला व्यक्ति जो धर्म पथ पर अग्रसर होकर कदम बढ़ाता है। एक ओर तो इन्द्रिय दमन और अपने को कष्ट देने वाली अग्नि की शिखाओं में जलता रहता है दूसरी ओर असंख्य तृष्णाओं एवं वासनाओं की चाहना उसे हर क्षण दुःख देती है। कहा भी है तृष्णैव जीर्णा वयमेव जीर्णा। एक ओर तो कुआँ है दूसरी ओर खाई। ध्यान के बिना किसी एक में तो उसे गिरना ही पड़ता है।

परमात्मा की प्राप्ति न तो भोग में है कि हम संसारिक विषय भोग विलास में ही लिप्त रहें और ना ही इस तरह इन्द्रियों के दमन करने में है अपितु यह तो आत्म जागरण में है। जागनी का वास्तविक अर्थ आत्मा को अपने प्रियतम की पहचान होना है। कलश ग्रन्थ में कहा गया है–

एही अपनी जागनी, याद आवे निज सुख ।
याही से इश्क आवही,
याही से होइए सनमुख ।।

परमधाम में अपने प्रियतम के साथ माणिक पहाड़,

हौज कौसर, पुखराजी पहाड़ पर, पच्चीस पक्षों के विहार में हम सुख लिया करते थे उन सब सुखों की याद आने से ही धनी के प्रति इश्क होगा।

जाग देखो सुख जागनी,
सुख सुहागिन जोग ।
तीन लीला चौथी घर की,
चारों को यामें भोग ।।

पहली बार जब ब्रज में आए तो नींद में थे अर्थात् अज्ञानता थी दूसरी बार जब रास में आए तो कुछ नींद में थे कुछ जाग्रत थे अर्थात् प्रियतम की पहचान हो गई थी पर घर की पहचान नहीं थी तीसरी बार जागनी के ब्रह्माण्ड में श्री कुलजम स्वरूप वाणी के अवतरित हो जाने से अपने घर (परमधाम) और आत्मा के प्रियतम अक्षरातीत की पूर्ण पहचान हो जाने पर ज्ञान द्वारा तो हम हृदयमगंम कर चुके हैं पर इस ज्ञानमयी स्वरूप को जान कर प्रेम द्वारा ध्यान के माध्यम से ही अनुभूति की जा सकती है अन्यथा यह मानव जीवन ही व्यर्थ है। वाणी में कहा भी है–

मानव देह अखण्ड फल पाइए,
पाए के वृथा क्यों गमाइए।
ए तो अधखिन को अवसर
क्यों खोवत मांझ नीदंर ।।

सुन्दरसाथ जी जब तक यह समझ नहीं आता तब तक कुछ होने वाला नहीं है। यह वाणी जाग्रत बुद्धि का ज्ञान जाग्रत बुद्धि द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। जाग्रत बुद्धि की प्राप्ति के लिए ध्यान द्वारा जाग्रत बुद्धि में युगल स्वरूप को अपने अन्दर बसाना होगा

सुन्दरसाथ जी अति हर चीज की बुरी होती है। सुन्दरसाथ जी इन दोनों अतियों से उबरने के लिए अपने को पूर्ण ब्रह्म परमात्मा अर्थात् राज जी को समर्पित करना पड़ता है। ना कि अनेक प्रकार के रंग बिरंगे, सबको आकर्षित करने वाले वस्त्र पहनने या कौतहूलों का प्रदर्शन करने में नहीं अपितु नर से नारायण बननेकी आन्तरिक यात्रा का नाम है। उसी प्रकार से एक ब्रह्मात्मा को इस यात्रा को पूर्ण करके उस अक्षरातीत युगल स्वरूप को पाना है।

जो अपनी मैं खुदी को पूर्ण रूप से समर्पित करके उसके प्रति अपना पूर्ण समर्पण कर देता है वह उस परमात्मा को पा लेता है।

कबीर जी ने कहा है भी है–

लाली मेरे लाल की जित देखूं तित लाल ।
लाली देखन मैं गई मैं भी हो गई लाल ।।

वाणी में भी कहा गया है–

मारया कहया काढ़या कहया,
और कहया हो जुदा ।
एही मैं खुदी टले,
तब बाकी रहया खुदा ।।

परमात्मा की प्राप्ति का अर्थ किसी को पकड़ना नहीं सारी पकड़ को एक साथ छोड़ना है। सारी अतियों से द्वन्दों से ऊपर उठना है जो भी ब्रह्मात्मा अपने को ध्यान में लगा कर अपनी चेतना की लौ को इसी द्वन्दों की अतियों रूपी आंधी से बचा लेती है तो उसे वह कुंजी मिल जाती है जिससे सत्य का दरवाजा परमधाम खुलता है। तभी एक जगी हुई रूह उस दिव्य गंध को प्राप्त कर दूसरी सोई हुई आत्माओं को जाग्रत कर सकती है। उस गंध से सोई हुई आत्मा जाग्रत होकर मुस्कराने लगती है।

आवश्यक सूचना

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा का **चौदहवां वार्षिकोत्सव,**
01 से 07 सितम्बर 2020 को मनाया जायेगा।

श्री प्राणनाथ महिमा

केवल कृष्ण बजाज, फाजिलका, पंजाब

श्री राज श्यामा जी ने मेरे हाथ में कागज और कलम पकड़ा दी है तांकि मैं पाँचों स्वरूप श्री प्राणनाथ जी अर्थात्, खुद राज श्यामा जी के बारे में दो शब्द लिख सकूं। मेरी सामर्थ्य कहाँ कि मैं उनके बारे में कुछ लिख सकूं। परन्तु यकीन है कि जो कुछ भी लिखा जाऐगा, उनके हुकम से ही लिखा जाऐगा।

श्री प्राणनाथ निज मूल पति,
श्री मेहराज सुनाम ।
तेज कुंवरि भयामा युगल,
पल पल करूं प्रणाम ।।

श्री प्राणनाथ जी किसी तन का नाम नहीं है, वे तो हमारे निज मूल पति हैं अर्थात् आदि काल से हमारे अंग संग हैं। यहाँ पर जिस तन में पांचों शक्तियां आंई, उनका यहाँ पर शारीरिक नाम श्री मिहिराज था (वे केशव ठाकुर के सुपुत्र थे) और तेजकुंवरि उनकी धर्मपत्नि का नाम है, जिन्हें श्यामा जी कह सकते हैं। मैं श्री प्राणनाथ निज मूल पति, श्यामा सहित युगल स्वरूप के चरणों में बारम्बार प्रणाम करता हूं।

धनी की कृपा, धनी के स्वरूप जैसी ही अखण्ड सागर के समान है, जिसमें मैं हिल मिल गई। धनी की कृपा के सागर में माया की एक बूंद भी नहीं है। कलश हिन्दुस्तानी प्र. 21, चौ. 2

अब गली मैं दया मिने,
सागर सरूपी खीर ।
दया सागर भरपूरण,
एक बूंद नहीं मिने नीर ।।

मेरे प्राणवल्लभ अक्षरातीत श्री प्राणनाथ, जिनके स्वरूप की पहचान कर महाराजा छत्रसाल जी ने भरे दरबार में डिंडिम घोष के साथ यह बोला था–

साथ समस्त के बीच में,
युगल धनी बैठाए ।
कही तुम साक्षात अक्षरातीत हो,
हम चीन्हा तुम्हें बनाए ।।
श्री ठकुरानी जी साथ संग ले,
पधारे मेरे घर ।
धनी बिना तुम्हें और देखे,
सो नहीं मिसल भातवर ।।
बीतक 60/57, 58

श्री प्राणनाथ जी के सम्बंध में तारतम वाणी स्पष्ट निर्देश करती है–

रे हूं नाहीं, रे हूं नाहीं, सिध साध संत री
भगत, नाहूं बैश्णव अपरस आचार।
जात कुटम कुल नीच ना ऊंच,
ना हूं बरन अठार ।। कि.11/1

कुछ तथाकथित स्वंयंभू महान विद्वानों के द्वारा अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी को जानबूझकर आचार्य, कवि और महापुरूष जैसे शब्दों से सम्बोधन करने की जो होड़ मची है, उससे श्री राज जी के प्रति विश्वास और समर्पण का मूल्यांकन हो जाता है।

श्री प्राणनाथ जी ने, पांचों शक्तियां आ जाने पर इस ब्रह्माण्ड को अखण्ड करने का मन में सोच लिया

अर्थात् उनके मन में आया कि इस दुनियां को जिसमें जो वे खेल देख रहें हैं उन्हें अखण्ड नहीं किया तो उन्होंने इस दुनियां को क्या देखा?

मोहे दिल में ऐसा आइया,
ए जो खेल देखया ब्रह्माण्ड ।
तो क्या देखी रे हम दुनियां, जो इनको न
करूं अखण्ड ।। कि.96/19

श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब जी की महिमा के बारबर महिमा वाला न तो इस ब्रह्माण्ड में हुआ है और न कभी होगा, उनके सूर्य रूपी उजाले से सब ओर प्रकाश हो गया है। श्री कृष्ण जी के स्वरूप से जो लीला हुई उसमें केवल ब्रज, गोकुल एवं मथुरा ही अखण्ड हुई, शेष सारे ब्रह्माण्ड का लय हो गया।

तारीफ महमद मेहंदी की,
ऐसी सुनी न कोई क्या हें ।
कई हुए कई होयसी,
पर किन ब्रह्माण्डों नाहें ।।

श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में जो लीला इस जागनी के ब्रह्माण्ड में हो रही है, उसमें चौदह लोकों वाले इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को ही अखण्ड मुक्ति मिलेगी। श्री जी साहिब इस ब्रह्माण्ड में सभी प्राणियों का हिसाब करके न्याय करेंगे तथा उनके हृदय को निर्मल करके बहिश्तों में अखण्ड कर देंगे, जो कि कोई सन्त महापुरूष या कवि नहीं कर सकता, इसलिए जो भी मन्चों पर भोले भाले सुन्दरसाथ को गुमराह कर रहे हैं कृपया वे इसे बन्द करें।

श्री पद्मावती पुरी धाम में 5000 सुन्दरसाथ की संख्या के साथ किलकिला नदी के तट पर कौन आया है?इसका उत्तर सबको मालूम है, फिर भी आश्चर्य है कि श्री प्राणनाथ जी को अक्षरातीत कहने में लज्जा क्यों लगती है?

नदी किलकिला तीर पर,
उतरे परमहंस आए ।
तिनमें सिरदार अक्षरातीत,
देख अपना ठौर सुख पाए ।।
बी. सा. 60/12

खुलासा 3/74 का कथन है–

हम बन्दे रूहें इन दरगाह,
कह्या अर्स दिल मोमिन ।
यारों बुलावें मुहम्मद,
करो सिजदा हजूर अर्स तन ।।

अर्थात् परमधाम से आई हुई आत्माऐं अक्षरातीत के प्रेम मार्ग की अनुयायी हैं। उनका हृदय ही अक्षरातीत का धाम है। तारतम वाणी के प्रकाश में श्री प्राणनाथ जी अपने चरणों में बुला रहे हैं। इन्हीं महामति जी के धाम हृदय में प्रियतम परब्रह्म विराजमान हैं। इसलिए इनके धाम हृदय वाले तन को अक्षरातीत मानकर प्रत्यक्ष रूप से प्रणाम करो यह चौपाई निर्विबाद रूप से श्री प्राणनाथ जी को पूर्णब्रह्म अक्षरातीत सिद्ध करती है। जो सुन्दरसाथ गुम्मट जी को मात्र समाधि कहकर प्राणनाथ जी की महिमा को खण्डित करने का प्रयास करते हैं उन्हें खुलासा ग्रन्थ की 3/65 चौपाई का चिन्तन करना चाहिए।

कह्या खाक वजूद नासूती,
हादी बैठा वजूद धर ।
दुनी दरिया अन्धेरी,
हादी चले ना क्योंए कर ।।

श्री प्राणनाथ जी श्री मिहिरराज जी के तन में ध्यानावस्था में अभी भी विराजमान हैं। इसलिए किसी भी सुन्दरसाथ को गुम्मट जी के लिए श्री प्राणनाथ जी की समाधि कहने का दुस्साहस नहीं करना चाहिए। संध्या आरती में स्वरूप पढ़ने से पहले अर्थात् 'स्वरूप सुन्दर सनकूल सकोमल' से पहले नवखण्ड आरती

बोली जाती है।

भई नई रे नवोंखण्डों आरती ।

श्री विजया अभिनंद की आरती,
प्रेम मगन होए उतारती ।

सखी आप पिया पर वारती,
भई नई रे नवोंखंडों आरती ।।

बुध जी की जोतें कियो प्रकाश,
त्रैलोकी को तिमर किया नास ।

लीला खेलें अखण्ड रास विलास,
भई नई रे नवोंखण्डों आरती ।।

''श्री जी साहिब जी मेहरबान''

आप भोले भाले सुन्दरसाथ बहकावे में आकर जो कुछ भी कर रहे हो, आप सबको मालूम है फिर भी मेरे साहब, पल पल आप पर मेहरबान हैं, इसलिए उनकी महिमा का बखान इस नश्वर जिह्वा से नहीं किया जा सकता।

***

खुश कौन है (Who is Happy)

प्यारे सुन्दरसाथ जी! मैं एक छोटी कहानी बताने जा रहा हूँ। ध्यान से पढ़ियेगा। एक बार एक काला कौआ एक जंगल में बहुत खुशी से रहता था। एक दिन उसने एक सफेद हंस पक्षी को देखा, उसे देख कर उसने अपने मन में सोचा ''ये कितना श्वेत वर्ण वाला सुन्दर पक्षी है और मैं कितने काले रंग का हूँ। कौआ स्वयं से बातें करने लगा।'' ''मुझे लगता है कि यह संसार का सबसे खुशी पक्षी है। इससे ही जाकर पूछता हूँ।'' जब उसने हंस को अपनी मनोदशा बतायी तो उसके उत्तर से वह हैरान हो गया। हंस बोला ''मेरे पास तो सिर्फ एक सफेद रंग है, जरा तोते को दखो, उसके पास दो रंग हैं, मेरे हिसाब से वो ही पूरे संसार में सबसे खुश प्राणी है।'' कौआ महाराज पुनः तोते से वही प्रश्न करने दौड़ पड़े। तोते ने कहा, ''मैं तो सिर्फ दो ही रंग वाला हूं, असली खुशी का हकदार तो मोर है, जिसके पास अनेक रंग हैं।'' अब कौआ अपने प्रश्न को लेकर मोर से मिलने एक चिड़ियाघर में चला गया। वहाँ मोर को देखने के लिए सैकड़ों लोग इकट्ठे हुए थे। उसने मोर को बोला ''तुम्हे देखने भर के लिए इतने लोग आते हैं और मुझे तो दूर से ही पत्थर मार कर भगा देते हैं।'' ''तुम सबसे खुश प्राणी हो।'' इस पर मोर ने कहा ''कि मुझे लगता था कि मैं ही संसार का सबसे सुन्दर, आकार्षक और खुश पक्षी हूँ, पर मेरी सुन्दरता के कारण मैं चिड़ियाघर में बंद हूँ। अगर मैं एक कौआ होता, तो मुझे कोई कैद नहीं करता और मैं जहाँ चाहे वहां मजे में घूमता।''

तो प्यारे सुन्दरसाथ जी, हमारी भी यही समस्या है। हम दूसरों से खुद की तुलना करते हैं और दुखी होते रहते हैं।

हमारे पास परमधाम व श्री राज जी की अखण्ड सुखदायी तारतम वाणी होते हुए भी हम इसके स्थायी सुखों से वंचित रहते हैं। तो चलिये आज से, अभी से हम अपने सच्चे आत्मिक धन से ऐसी खुशी पाने का प्रयास करते हैं जो सदा बनी रहे, तथा निरन्तर बढ़ती जाए। सदा आनन्द मंगल में रहिए।

आत्मन (मेलबर्न)

कांवड यात्रा - अन्धविश्वास एक बहुत बड़ा पाखंड

आचार्य सुभाष, श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा

कुछ लोगों का मानना है कि कांवड़ लेके आने से सब पाप कट जाते हैं, मन चाही इच्छा जैसे नोकरी,सुन्दर पत्नी और भी पता नहीं क्या क्या प्राप्त होता है। अगर कांवड़ लाने से ही मन की इच्छा पूर्ण होती है तो भगत सिंह ,नेताजी सुभाष, बिस्मिल और हजारों हजार महापुरुष जिन्होंने आजादी के लिए अपने प्राण गंवाए है वो कांवड़ क्यों नहीं लेके आए ?जान भी नहीं जाती और काम भी बन जाता।अगर कांवड़ लाने से नोकरी मिलती है तो काहे घर वालों की गाढ़ी कमाई को कोचिंग इत्यादि पर खर्च करवाते हो ?

अगर गंगा में डुबकी लगाने से पाप धूल जाते हैं और मनुष्य पवित्र हो जाता है तो अपराधियों के लिये जेल बनाने की क्या आवश्यकता है ?एक बार गंगा में नहला लाओ और वो सुधर जाएगा।अगर इतना ही उस मूर्ति और उस लिंग में बल है तो काहे हर साल भगदड़ आदि में सैंकडों कांवड़िये मारे जाते हैं ?वो तो आपके भगवान की ही सेवा कर रहे होते हैं फिर काहे आपके भगवान उन्हें मरने देते हैं।

केदारनाथ में भी तो हजारों लोग मारे गए थे वहाँ भी आपके भगवान विराजमान हैं फिर क्यों उन्होंने लोगों की जान ले ली ?अब इन पौराणिकों का एक और पाखण्ड सुनिये –कहते हैं कि महाशिवरात्रि का व्रत करने से भी सारी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं ! भारत सरकार के अनुसार देश में करोड़ों लोगों को दो वक्त का भोजन नहीं मिल पाता, जाहिर सी बात है कि वो भी सोमवार और शिवरात्रि का व्रत करते हैं,भूखे मरते हैं ,फिर क्यों आपका मूर्ति वाला भगवान उनकी इच्छा पूरी नहीं करता ?

वे कोई गाडी बंगला नहीं बल्कि दो वक्त की रोटी मांगते हैं।क्या आपका भगवान भी वर्तमान नेताओं की तरह भ्रष्ट है कि जो मंदिर में आकर चढ़ावे के रूप में रिश्वत देगा उसी का काम होगा ? अगर ऐसा है तो क्या उन सबके काम पूरे होते हैं जो उसके कार्यालय में जाकर रिश्वत देते हैं ?क्या आपका भी कोई काम हुआ है मूर्ति के सामने सर फोड़ने से ?अगर हुआ है तो पया प्रमाण दें कि फलां मूर्ति के सामने माथाफोडी करने से मेरा अमुक काम हुआ है।आपसे निवेदन है कि जो पीने का पानी हमें मोल लेना पडता है और जिस दूध की कमी के कारण हमारे देश में कुपोषण फैलता जा रहा है उसे व्यर्थ ना बहाएं और अन्धविश्वास न फैलाएं।

'पौराणिक' :– "पूजा ही तो करनी है।किसी की भी कर लो मन मे श्रद्धा होनी चाहिए बस !"

'सैद्धांतिक' :– "तभी पत्थरों पर सिर पटकते पटकते मज़ारों दरगाहों तक जा पहुँचे थोथी मूर्खता और अज्ञानता को श्रद्धा का नाम देकर । जब आप परमात्मा के धाम, स्वरूप और लक्षणों को जानते तक नहीं हो तो श्रद्धा किस पर करोगे ?"

हिन्दू कौम भक्ति के नाम पर धन को लुटा रही है , वैदिक उपासना से दूर इन पाखंडो में फंस कर

जीवन के लक्ष्य से भटक कर दुःख उठा रही है। कांवड़ यात्रा का सौ साल से पूर्व में कोई इतिहास नहीं । **दस बीस रु के बांस की 'कांवड़ मोदीनगर में मुसलमान बनाते हैं और हिन्दू आस्था के नाम पर हजारों रु में खरीद कर सारा काम धाम परिवार और समाज की जिम्मेदारी छोड़ कर यात्रा पर चल देता है'** । **वस्तु का भाव वहां होता है जहाँ अभाव हो , एक तो शिव की जटाओं में ऐसी गंगा घुसाई कि निकालने का नाम ही नहीं दूसरे सावन में परमात्मा वैसे ही अमृत तुल्य वर्षा कर सर्वत्र जल की व्यापकता प्रदान करता है फिर कहां आवश्यकता है कि गंगा से जल भर कर शिव की जटा में डाला जाए ?**

हमारे यहाँ यात्राएं भी सावन और आसोज माह में अधिक होती हैं जब खेत खलिहानों में काम होता है ! युवा शक्ति को इन से विमुख कर देश बर्बाद करने का षड्यंत्र चल रहा है और हम धर्म आस्था के नाम पर इसके भागीदार बन रहे हैं । **इसी प्रकार कलावा जो हाथ में बांधते है इसे अलीगढ़ में मुसलमान बनाते हैं और नाम से ही स्पष्ट है इसे मुल्ला बनाते हैं और हम इसे मौली कहते हैं** । हमारा सब धन तो अमरनाथ,वैष्णो देवी आदि जगहों पर मुसलमान खा रहे हैं और हम हैं कि चितन के लिए तैयार ही नहीं ! **जागो हिन्दुओ जागो ! वेद,उपनिषदों, दर्शन शास्त्रों को पढ़ो, कांवड़ यात्रा छोड़ बडे बडे ज्ञान गोष्ठी का आयोजन करो,सत्य सनातन वैदिक मार्ग की यात्रा करो तभी कल्याण होगा ।**

'प्रश्न' : 'वदतो व्याघ्यात दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर :– जब किसी व्यक्ति के वाक्य में परस्पर विरोधी बातें हों तो उसको हम कहते हैं कि उसकी बातों में वदतो व्याघ्यात दोष है । ईश्वरीय ग्रंथ वेद और वेदानुकूल चलने वाले ऋषि त आर्ष ग्रन्थ ही वदतो व्याघ्यात दोष से सर्वथा मुक्त हैं । मनुष्य का कल्याण केवल उन्हीं ग्रन्थों के अध्ययन से संभव है जिनमें वदतो व्याघ्यात दोष न हो । वेद और आर्ष ग्रन्थ एक ही दिशा में चलते हैं ।बाकि शेष सारे ग्रंथ पुराण, कुरान, बाईबल ,विवेकानंद,रामपाल, मंडलेश्वर, ओशो आदि के ग्रन्थ वदतो व्याघ्यात दोष में लिप्त हैं, जिनमें एक स्थान पर कुछ कहा है और दूसरे स्थान पर उससे उलट कहा है ।

ऐसे अनार्ष ग्रन्थ पढने और अन्धाधुन्ध नकल करने का परिणाम ही है कि राधे मां ,आसाराम और रामपाल जैसे सैंकडों लोग हिन्दुओं के भगवान बनकर दुनिया में भारत को बदनाम करते हैं और कांवड, गणेश विसर्जन ,जगराता,लिंग पूजा,पाषाण पूजा व पशु बलि जैसी कुप्रथाओं का प्रचार करते है ।जिसका परिणाम निकलता है–धर्म के नाम पर अंधविश्वास का बोलबाला।शाश्वत सत्य का लोप।आत्मकल्याण के पुनित मार्ग से हटकर बंधनमय मार्गों का अनुसरण करना।

हिन्दूओ की लुटाई,
मुसलमानों की कमाई।
कहो कांवड किसने बनाई,
क्यों हिन्दुओं अक्ल गंवाई।
मुल्लाओं ने लकड़ी सजाई
तुमने उसकी बोली लगाई
करोडों अरबों सम्पति लौटाई,
किसने यह उल्टी रिती चलाई।
गंगा शिव की पुत्री बताई,
वही ला शिव लिगं पर चढाई ।

किसी ग्रंथ मे लिखी ना पाई,
वेद पुराण ढूंढ लिये भाई ।
कुछ ही जाते सीधे भोले,
ज्यादातर नशेडियो के टोले।
रस्ते में कुछ भंग रगडते,
गाली दे आपस में लडते।
लठ बजाती कुछ आवै टोली,
बंब बंब करते हैं दिन धोली।
ऊंची आवाज में डी जे बजावै,
हुल्लड़बाजी करते आवै।
कुछ तो कर्जा लेकर जाते,
मुल्लाओं को देकर आते।
कांवड लाना कहीं दिखाओ,
इनाम एक लाख का पाओ।
रामायण,महाभारत गीता,
न राम लाये ना लाई सीता।
महाराणा प्रताप शिवाजी,
ना लाये थे गुरु गोविन्द जी।
वीर वैरागी झांसी रानी,
कब लाई गंगा का पानी।
भगतसिंह बिस्मिल और शेखर,
कब आये गंगा जल लेकर।
ना देश भक्ति ना प्रभु की भक्ति,
कहो कांवड मे कोनसी शक्ति ।
शिव ईश्वर का ही एक नाम,
उसको भजलो सुबह और शाम।
परमात्मा वह रमा कण कण में,
ध्यान योग से पाओ मन में ।
बात सही कहूँ बुरा ना मानो,
हानी लाभ अपना पहिचानो ।
वैदिक धर्मी बन जाओ सारे,
पाखंडो से मिले छुटकारे ।
सुभाषाचार्य कहे क्या ज्यादा,
हिन्दूओ को हानि,
मुल्लाओं को फायदा ।

(मैने किसी द्वेष भावना से नहीं लिखा है। हिन्दुओं को इस बर्बादी से जो अरबो रुपये हर वर्ष कांवड लाने के नाम पर इस भारत को इस्लामी देश बनाने वालो को देकर आते हैं उसे अवगत कराया है।)

रसोई के चोक से - भोजन का महत्व

महिमा दीदी, श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा

श्याम मन्दिर सोई होत जित ।
जोड़े भक्त मन्दिर है तित ।।

25 पक्ष परमधाम के मध्य में रंगमहल है।

''सौ सीढ़ी चढ़के ऊपर जाइए 28 थंभ अपार''

28 थंभ के चौक पश्चिम तरफ हवेली 50 मन्दिर लम्बा और 30 मन्दिर चौड़ी जगह में देहलान से लेकर रसोई की की चौक बनी हैं। परमाधाम की लीला में सबसे पहले ही रसोई की चौक का वर्णन है। क्योंकि रंगमहल को ही प्रेमालय, रसालय, रसालय कहा जाता है। रसोई शब्द ही रसपूर्ण और आनन्द पूर्ण है। धाम लीला में भी और जगत के व्यवहार में भी। रसोई घर ऐसी जगह है जहाँ से प्रेम भी और मोह भी प्रकट होता है। कैसे?

जैसा खाये अन्न, वैसा होय मन ।
जैसा पिये पानी, वैसी बोली वाणी ।।

क्योंकि कोई खाने के लिए जीता है और कोई जीने के लिए खाता है। संसार में भी देखा जाए तो रसोई घर सिर्फ एक प्रेम की प्रस्तुति करने की जगह है, क्योंकि रसोई की चौक कितने भी धनी से धनी के घर में भी होती है और गरीब से गरीब के घर में भी। क्योंकि कोई भी अतिथि घर में आया तो सबसे पहले पानी पिलाना फिर कुछ न कुछ खिलाना, बातों बातों में अन्दर से प्रेम प्रकट होता है। प्रेम की प्रस्तुति भोजन से ही होती है। स्वयं के भाव भी भोजन से ही प्रकट होते हैं। इसीलिए रसोई की चौक प्रेम का महल है। चौक तो केवल घनीभूत है और भोजन को परोसना द्रवीभूत। रसोई के महल में ही सम्बन्धों को आकर्शित करने की शक्ति होती है। यही तो भाव का प्रकटन है क्योंकि हम कितने भी भूखे क्यों न हों लेकिन यदि हमें भोजन परोसते समय गुस्से में परोस दिया तो हम वो भोजन ग्रहण नहीं करेंगे और यदि हम भर पेट भी हैं और किसी के घर में गये और उसने रूखा–सूखा भोजन प्रेम से परोस दिया तो कितने भरपेट क्यों न हो दो टुकड़े हम खा ही लेंगे।

योगेश्वर श्री कृश्णा ने भी दुर्योधन के 56 प्रकार के व्यंजनों को त्यागकर विदुर के घर केले के छिलके खाए।

दुर्योधन के मेवा त्यागे,
साक विदुर घर खाई।
सबसे ऊंची प्रेम सगाई ।।

हम भोजन ग्रहण नहीं करते, सामने वाले का प्रेम ग्रहण करते हैं। इसीलिए तो हमारा जीवन प्रेममयी है। हम सब उस शुद्ध, अद्वेत, आनन्द अखण्ड के प्रेम को हर वस्तु में खोज रहे होते हैं। जैसे – देखिए हमारा 'ब्रज' मे भोजन का महत्व सबसे पहले प्रेम को ही दर्शाता है माखन चोरी लीला से लेकर प्रेममय वातावरण में रहे। रास का अंकुर फूटना रात्रि के समय भोजन की ही बातों से शुरू हुआ और रास भी भोग से पूरा हुआ। ग्वाल बालों के जूठन खाते देखकर के ब्रह्मा जी ने श्री कृश्ण की परीक्षा ली। परीक्षा में खुद निश्फल हो गये।

सुदामा चावल के टुकड़े छिपाकर कृश्ण के पास

ले गये। कृश्ण ने उन चावल के टुकड़ो को भी छीनकर प्रेम से खाया। और वृन्दावन में ब्राह्मणों के यज्ञ में श्री कृश्ण ने ग्वाल बालों को भोजन लेने के लिए ब्राह्मणों के पास भेजा उन्होंने भोजन देने से इन्कार कर दिया और ब्राह्मणियों ने उनको प्रेम से भोजन कराकर धन्य–धन्य हो गयी और चौथे दिन की लीला में देखा जाए तो सदगुरू देवचन्द्र जी ने जब घर से निकलने का निर्णय लिया तो खाने की सामग्री भी तैयार की और जब देवचन्द्र जी बारात से मिले तो बारातियों ने बोला कि हमारे साथ ही भोजन करना। देवचन्द्र जी ने पहले दर्शन पठान के रूप में पाए। उसी स्वरूप को प्रेम से भोग लगाना शुरू किया। दूसरी बार दर्शन में हाथ में घूँघरी का प्रसाद मिला। तीसरे दर्शन के बाद जब गाँग जी भाई के घर में पधरावनी करके सबको भोजन और चर्चा का आनन्द दिया। अब पाँचवे दिन की लीला में देखा जाए तो श्री जी की जागनी यात्रा में चौपाई **''उतरना आहार घटाइया, रहया पैसे भर दोए।''** भोजन घटाकर मिहिरराज की अति कठिन साधना शुरू हुयी। मिहिरराज की धर्मपत्नी फूलबाई ने नौ दिन के भूखे एक सुन्दरसाथ को प्रेम से भोजन कराया। मिहिरराज जी ने जब अपने सदगुरू के नाम पर भण्डारा कराने का विचार किया तो उन्हें जेल जाना पड़ा फिर भी वो पीछे नहीं हटे और परिणाम स्वरूप हम सभी सुन्दरसाथ के कल्याणार्थ ब्रह्मवाणी रूपी हार मिला। श्री जी ने जागनी यात्रा में करोड़पतियों से भी रोटी के टुकड़े मँगवाए और बाइजुमहारानी जी प्रेम से भोजन कराती। पन्ना में अमीरल मोमिन कहलाने वाले, श्री छत्रसाल जी ने श्री जी के लिए कहा चौपाई **''तुम ही अक्षरातीत हो तुम हो धनी धाम।''**

कहने वाले महाराज छत्रसाल जी तीन साल तक ना समझी के कारण भोजन नहीं करवा पाए।

उनके प्रति प्रेम और समर्पण होने के कारण भी बाद में पछताना पड़ा। मर्यादा पुरूशोत्तम राम के जीवन में भी देखा जाए तो श्री राम ने भी प्रेम के कारण ही शबरी के जूठे बेर खाए।

भोजन में जोड़ने की सामर्थ्य होती है, संगठनात्मक भाव होता है। इसीलिए हमें परमधाम के जैसे प्रेम को यहाँ अनुभूति करना एक–एक वस्तु को पकड़ना है, क्योंकि प्यारे सुन्दरसाथ जी हमने आज पानी पिया और प्यास कल मिटे ये तो नहीं हैं, ना।

जब पानी पिये तब ही प्यास मिटती है। इसीलिए हमको **''इतहीं बैठे घर जागे धाम''** करना है। जागे धाम की स्थिति में रहना है। ये शरीर छूटने के बाद परमधाम जाकर के सब अनुभव करेंगे ये कभी नहीं सोचना चाहिए। क्योंकि जैसे पानी पिये प्यास खत्म, भोजन खाए भूख खत्म, तो परमात्मा प्राप्ति का अनुभव भी इसी शरीर से यहीं अभी करना है। इसीलिए ब्रह्मसृष्टि का वाणी चिन्तन व चितवनी ही आहार है।

खना पीना खिन खिन लिया,
प्यार अर्स रूहन ।
पल पल मासूक देखना,
यही आहार आशिकन ।।

परमधाम की आत्माओं के द्वारा क्षण–क्षण धनी से प्रेम करना ही भोजन करना और जल पीना है।

श्री राज का पल–पल दीदार (दर्शन) ही आत्माओं का आहार है। इसीलिए श्री राज जी का दर्शन करना भोजन करना है और प्रेममयी लीला में डूब जाना ही पानी पीना है।

प्यारे सुन्दरसाथ जी अब संसार के भोजन में इतनी सामर्थ्य है, तो अपने धनी के दीदार में क्या सामर्थ्य नहीं?इसीलिए सभी सुन्दरसाथ से मेरी अन्तर हृदय से आर्त्त पुकार है कि धनी के ध्यान में ही डूबें और अपनी आत्मा को परमधाम के 25 पक्षों में विचरण कराएं।

कण–कण में श्री राज जी की अनुभूति हो बस ये ही प्रार्थना है। अन्त में अपने प्रियतम प्राणवल्लभ को हृदय में बसाकर अभी इसी तन से अनुभूति होना हमको–

''इतहीं बैठे घर जागे धाम,
पूणर मनोरथ हुवे सब काम''

आत्म-मंथन

श्री प्राणनाथ जी ज्ञानपीठ, सरसावा

मेरे प्रियतम के अति लाड़ले सुन्दरसाथ जी आपके श्री चरणों में मेरा सप्रेम प्रणाम ।।

सुन्दरसाथ जी, जब मुझे लेख लिखने के लिए कहा गया तो यह समझ ही नहीं आया कि क्या लिखूँ?क्योंकि वर्तमान समय में सुन्दरसाथ ज्ञान की दृश्टि से तो लगभग सब कुछ जानते ही हैं। लेकिन जिस प्रकार मंत्र का जाप करने मात्र से कुछ भी प्राप्ति नहीं होती, उसमें निहित ज्ञान को जीवन में चरितार्थ करने में ही उस मंत्र की सार्थकता होती है। उसी प्रकार आज हम सब वाणी के ज्ञाता तो बन चुके हैं। लेकिन क्या हम जिस राह पर दूसरों को चलने के लिए प्रेरित कर रहे हैं, हमने स्वयं उस राह पर चलना प्रारम्भ किया है?क्या हम स्वयं वाणी में दर्शाये हुए अपने मूल लक्ष्य के प्रति सावचेत हुए हैं?क्या वाणी जिस प्रेम आनन्द के सागर अक्षरातीत धनी के रोम–रोम में डुबो रही है उस सागर की एक–एक बूँद का भी रसास्वादन हमने किया है?

सुन्दरसाथ जी यदि यथार्थ में हमने धनी के द्वारा दिये गये श्री मुखवाणी के ज्ञान को केवल ज्ञान का विशय न बनाकर उसके हर एक शब्द से उठी हुई अपने प्रियतम के दिल की प्रेमभरी पुकार को दिल से सुना होता तो, आज हमारा उत्तर 'ना' में नहीं होता।

हमारे प्राणों से भी अधिक प्रिय धनी से हम एक रस हो चुके होते।

सुन्दरसाथ जी हम बीतक में वर्णित दीपबंदर के जयराम भाई कंसारा की तरह ही ना जाने कितने जन्मों से इस माया के विश का पान कर रहे हैं।

हमारे धनी का प्यार ही है, जिसके कारण वर्तमान जीवन में धनी के हृदय का प्रेम वाणी के रूप में प्राप्त हुआ हैं। लेकिन हमारा दुर्भाग्य तो देखो, उस प्रेम की मिठास को अनुभव में लाने के लिए सावचेत ना होकर सिर्फ उस मिठास के प्रचार–प्रसार में लगे हुए हैं। उस मिठास के ज्ञान मात्र से ही तृप्त हुए बैठें हैं।

सुन्दरसाथ जी इसका ऐसा मतलब बिल्कुल भी नहीं है, कि हम वाणी का प्रचार–प्रसार करना छोड़ दें या सिर्फ घर में ही बैठे रहें। अपने धनी की वाणी को जन–जन तक पहुँचाना उनके धाम स्वरूप व लीला का ज्ञान देकर दूसरों को प्रियतम के प्रेममयी ध्यान में लगाना भी हमारा ही कर्त्तव्य है।

लेकिन दूसरों की जागनी में इतने ना उलझ जाएं कि 'स्व' की जागृति को ही भूल जाएं। सुन्दरसाथ जी हमें स्वयं भी प्रेममयी चितवनी के माध्यम से धनी के दिल में हमारे लिए उमड़ रहे प्रेम के सागरों में डूबना है। एवं अन्य सभी को भी डुबोना है।

सुन्दरसाथ जी जैसे गौतम बुद्ध ने एक माँ द्वारा उसके बेटे की अत्यधिक गुड़ खाने की आदत को छुड़ाने के लिए उपदेश देने के लिए कहे जाने पर पहले स्वयं गुड़ खाना कम किया, तब जाकर उस बच्चे को समझाया, उसी प्रकार हमें भी पहले स्वयं माया के विशय, सुखों को इस नश्वर पिंड व ब्रह्माण्ड को पीठ देनी पड़ेगी। धनी के प्रेम की मिठास को आत्मसात करना पड़ेगा, तभी हमारे वचन सामने वाले को प्रभावित कर रकेंगे।

हमारी ब्रह्मवाणी के अनुकूल रहनी ही हमें अपने धनी से मिलाएगी, तथा दूसरों को भी उस राह पर चलने के लिए प्रेरित करेगी। फिर कुछ कहने की भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

There is a saying in English: 'Action speaks louder than words'.

सुन्दरसाथ जी हमें यह बात हमेशा ध्यान रखनी चाहिए, जैसे हम केवल स्वयं में बदलाव ला सकते हैं दूसरों में नहीं, उसी प्रकार हम सिर्फ और सिर्फ स्वयं की जागृति कर सकते हैं, दूसरों की नहीं। दूसरों को केवल समझाया जा सकता है।

सुन्दरसाथ जी यदि हम सब स्वयं की जागनी (आत्म जागृति) कर लेंगे तो, अन्य किसी की जागनी करने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

स्वयं की आत्म जागृति ही हमारा परम लक्ष्य होना चाहिए और यही हमारी परम सेवा भी है।

अब आया बखत रेहनीय का,
रात मेट हुई फजर ।

अब केहेनी रेहेनी हुआ चाहे,
छोड़ दुनी ले अर्स नजर ।।

अब समय आया रेहनीय का,
रूह फैल को चाहे ।

जो होवे असल अर्स की,
सो फैल ले हाल देखाए ।।

केहेनी कही सब रात में,
आया फैल हाल का रोज ।

हक अर्स नजर में लेय के,
उड़ाय देओ दुनी बोझ ।।

जिन केहेनी किल्लीय से,
खुल्या भिस्त का द्वार ।

सो केहेनी छुड़ाई हुकमें,
दे फैल रहनी सार ।।

कहे हुकम आगे रेहेनीय के,
केहेनी कछुए नाहें ।

जोस इस्क हक मिलावहीं,
सो फैल हाल के माहें ।।

(खिल्वत, प्र. चौ. 4, 5, 6, 14, 16)

जो कुछ कह्या कतेब ने, सोई कह्या वेद

कृष्ण कुमार कालड़ा, जयपुर

'एको ब्रह्म द्वितीय नास्ति' अर्थात परमात्मा एक है, ऐसा समस्त धर्म ग्रन्थों में कहा गया है, चाहे वे हिन्दू हों, मुस्लिम हों या अन्य किसी मत–मतान्तर के। भाषा, वेशभूषा, रंग, वर्ण, परम्परायें, रीति–रिवाज आदि के अन्तर के कारण सभी आपस में लड़ते रहते हैं। यह विरोध केवल हिन्दू–मुस्लिमों में ही नहीं है अपितु हिन्दुओं के लगभग सभी पंथों में देखने का मिलता है। हिन्दुओं के अतिरिक्त सिख, जैन तथा बौद्ध मतों को मानने वालों में भी इस प्रकार का वैचारिक मतभेद प्रायः पाया जाता है। इसी प्रकार, मुस्लिमों में भी शिया, सुन्नी तथा अन्य सभी फिरकों में हिंसात्मक विरोध रहता है। क्रिश्चियनों तथा यहूदियों का रक्त–रंजित विरोध किसी से छिपा हुआ नहीं है।

मूलतः यह विरोध धर्म–ग्रन्थों के गुह्य अर्थ न समझने तथा केवल बाह्य अर्थ लेने से है। इसका समाधन केवल शुद्ध आध्यात्मिक तत्व ज्ञान से ही सम्भव है जो श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी के प्रकाश में ही मिल सकता है और इसी से ही सम्पूर्ण विश्व एकरस हो सकता है। यदि हम तत्व ज्ञान की दृष्टि से विचार करें तो सभी मत–मतान्तरों की मान्यताओं में कोई भेद प्रतीत नहीं होता। वस्तुत कर्मकाण्डों की बाढ़ में तत्व ज्ञान छिप जाता है तथा साम्प्रदायिकता का रूप धारण कर लेता है।

प्रस्तुत लेख में हम तारतम वाणी के प्रकाश में परब्रह्म के सम्बन्ध में विशेष रूप से वेद (हिन्दू) तथा कतेब (मुस्लिम) पक्षों में व्याप्त विभिन्न मान्यताओं में एकीकरण का प्रयास करेंगे। उल्लेखनीय है कि सर्वप्रथम मुहम्मद साहब ही कुरान के द्वारा यर्थाथ सत्य ज्ञान लेकर अरब में आये। इसके पश्चात् अक्षरातीत परब्रह्म श्री राज जी की आह्लादिनी शक्ति श्री श्यामा जी श्री देवचन्द्र के रूप में तारतम ज्ञान लेकर भारत वर्ष की धरती पर आयी। मूल रूप से मुहम्मद साहब तथा श्री देवचन्द्र जी का ज्ञान एक समान है तथा इसमें कोई अन्तर नहीं है। परन्तु कर्मकाण्ड/शरियत पर चलने वाले हिन्दू और मुसलमान इसे सत्य तभी मानेंगे जब उन्हें श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी का प्रकाश मिल जायेगा।

- वेद पक्ष के अनुसार, परमधाम में परब्रह्म का अति सुन्दर किशोर स्वरूप है। इसे कतेब पक्ष में 'अमरद सूरत' कह कर सम्बोधित किया गया है।

- हिन्दू मान्यताओं के अनुसार, इस ब्रह्माण्ड में 14 लोक हैं : सात लोक पृथ्वी (मृत्यु) लोक के नीचे (यथा, अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल तथा पाताल) एवं छह लोक (यथा, भुवर्लोक, स्वर्ग, महर्लोक, जनलोक, तपलोक तथा बैकुण्ठ) ऊपर हैं। मुस्लिम मान्यताओं के अनुसार, 14 तबकों में पृथ्वी (मृत्यु) लोक को 'नासूत' तथा

बैकुण्ठ को 'मलकूत' कहा गया है। इसी प्रकार, बैकुण्ठ से परे निराकार, निराकार से परे बेहद मण्डल (अक्षर धाम/योगमाया) तथा इससे परे परमधाम है जिन्हें कतेब परम्परा में क्रमशः ला हवा, जबरूत एवं लाहूत (अर्श–ए–अजीम) कहा गया है।

• हिन्दू धर्मग्रन्थों (पुराण संहिता, माहेश्वर तंत्र आदि) में पहले से ही कहा गया है कि ईश्वरों के ईश्वर विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप इस धरती पर (भरतखण्ड) आयेंगे और कलियुग की आसुरी शक्तियों को नष्ट कर सभी प्राणियों को अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगे। इसी प्रकार, कुरान में भी लिखा हुआ है कि ईसा रूह अल्लाह (श्यामा जी) तथा ईमाम मंहदी (श्री प्राणनाथ जी) आयेंगे और अज्ञान रूपी दज्जाल को मारकर सम्पूर्ण विश्व में एक सत्य धर्म (निजानन्द) की स्थापना करेंगे।

• हिन्दू जिसे परमात्मा/परब्रह्म कहते हैं मुस्लिम उसे खुदा/अल्लाहतआला कहते हैं और दोनों में कोई अन्तर नहीं है। इसी प्रकार, अक्षरातीत, अक्षर व आदिनारायण को कतेब पक्ष में क्रमशः नूरजमाल, नूरजलाल व अजाजील कहा गया है। इसी प्रकार, विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप को आखरूल जमां ईमाम मुहम्मद मंहदी साहिबुज्जमा कहते हैं।

• हिन्दू धर्मग्रन्थों (अथर्ववेद, पुराण संहिता, माहेश्वरतंत्र) में तीन प्रकार की सृष्टियां, यथा जीव सृष्टि, ईश्वरीय सृष्टि तथा ब्रह्म सृष्टि का वर्णन किया गया है। इसी प्रकार मुस्लिम धर्म ग्रन्थ तफसीर–ए–हुसैनी में भी तीन प्रकार की उम्मत का उल्लेख आता है जिन्हें क्रमशः आम खलक, फरिश्ते व मोमिन कहा गया है। कुरान में इन्हें क्रमशः घास, अंगूर तथा खजूर की उपमा दी गई है। इसी प्रकार, हिन्दू धर्मग्रन्थों में जहां जीव सृष्टि, ईश्वरीय सृष्टि व ब्रह्म सृष्टि का मूल स्थान क्रमशः बैकुण्ठ, अक्षरधाम व परमधाम बताया गया है, उसी प्रकार कुरान में इन्हें क्रमशः मलकूत, जवरूत व लाहूत कह कर सम्बोद्धित किया गया है।

• पौराणिक ग्रन्थों में नारद जी को विष्णु भगवान का मन कहा गया है जिन्हें प्रजापिता ब्रह्मा ने एक स्थान पर स्थिर न रहने का श्राप दिया था। इसी प्रकार, मुस्लिम मान्यता के अनुसार, अजाजील के मन की शक्ति इब्लीस है जिसे आदम पर सजदा नहीं करने के कारण लानत लगी है।

• कतेब पक्ष में श्री श्यामा जी को रूह अल्लाह व श्री कृष्ण जी को मुहम्मद कहा गया है। इसी प्रकार जागृत बुद्धि को इस्त्राफील तथा परमधाम की जोश की शक्ति को जिब्रील कहा गया है।

• दोनों मतों के अनुसार, सभी प्राणियों के शरीर अलग–अलग हैं परन्तु उनकी आकृति समान है तथा उनमें विद्यमान चैतन्य (जीव/रूह) भी एक जैसा ही है।

• वेदों में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि इस संसार के लोगों के मन व बुद्धि स्वापनिक होने के कारण निराकार से परे नहीं जा सकती। इसी प्रकार, कतेब ग्रन्थों के अनुसार, यह सुरिया सितारे (ज्योति स्वरूप) को छोड़कर अर्श–ए–अजीम (परमधाम) नहीं जा सकती।

इसी प्रकार अनेक ऐसे तथ्य हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि दोनों ही मतों – वेद एवं कतेब – का आध्यात्मिक ज्ञान एक ही परम सत्य का उद्घोष करता हे। परन्तु इस सत्य को अंगीकार करने के लिये यह आवश्यक है कि हम श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी पर पूर्ण विश्वास लाये।

प्रेम निमंत्रणा **सेवा निमंत्रणा** **समर्पण निमंत्रणा**

मानखे देह अखण्ड फल पाइये, सो क्यों पाए के वृथा गमाइये।
ये तो अधखीन को अवसर, सो गमावत माझ निन्दर ।।

प्राणाधार प्यारे सुन्दरसाथ जी एवं धर्म–प्रेमी सज्जनों सादर प्रेम प्रणाम जी

आपको सूचित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी की पा एवं सतगुरु महाराज रामरतन दास जी की आशीर्वाद एवं धर्म–वीर जागनी रतन सरकार श्री जगदीश चन्द्र जी की प्रेरणा से **दिनांक 29/12/2019 से 02/01/2020 तक पंच– दिवसीय आत्म–जागृति शिविर का आयोजन उत्तर पूर्वांचल श्री निजानन्द जागनी सेवा समिति एवं आत्म–जागृति महिला मण्डल द्वारा श्री प्राणनाथ जी मन्दिर, शुकलाई (असम)** में होना निश्चित किया गया है।

आप सभी सुंदरसाथ जी एवं सम्पूर्ण धर्म–प्रेमी सज्जन अधिक से अधिक संख्या में पधारकर धर्म लाभ प्राप्त करें और अपने आत्म–जागृति के पथ पर चलने की प्रयास करें।

प्रमुख–वक्ता
परम–पूज्य श्री राजन स्वामीजी
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा, उत्तर प्रदेश

कार्यक्रम स्थल – श्री प्राणनाथ जी मन्दिर, शुकलाई

संपर्क नंबर
लोकनाथ जी– 09365749290
वालाजी निजानंदी– 07002453850
सूरज गुरुंग जी– 09101803546
बादल रिमाल जी– 091017 73656

जो भी सुन्दरसाथ इस कार्यक्रम में भाग लेने जा रहें है उनके लिये **आवश्यक सूचना** फ्लाइट से जानें वाले सुन्दरसाथ को गुवाहटी की फ्लाइट लेनी पड़ेगी। ट्रेन से आनेवाले के लिये आसाम के Rangiya (RNY) Station तक का टिकिट करना होगा।

प्राणाधार सुन्दरसाथ जी!

सादर प्रणाम जी!

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी ज्ञानपीठवासियों, विद्यार्थियों, आचार्यों एवं आगुन्तक अतिथियों में निशुल्क किया जाता है। आप सभी सुन्दरसाथ एवं उदारमना दानदाताओं से श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, रहने के लिए उत्तम व्यवस्था हो, उसके लिए आधुनिक ढ़ंग से गौशाला का निर्माण कार्य होने जा रहा है, इसके लिए जो भी सज्जन एवं सुन्दरसाथ दान देना चाहें ज्ञानपीठ उनका स्वागत करता है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं, और आप आने में असमर्थ हैं तो कृपया ज्ञानपीठ के खाते पर राशि जमा करके सूचित कर सकते हैं। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि आपके द्वारा दिया गया दान गौवों के संवर्धन में ही लगाया जायेगा।

।।धन्यवाद।।

विनम्र निवेदन

धाम धनी के लाडले सुन्दरसाथ जी! वर्तमान समय में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ सरसावा में शिक्षण, साहित्यिक एवं निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। जिन सुन्दरसाथ ने इन कार्यों के लिए अपनी सेवाएं लिखवायी है या स्वतः उनके मन में सेवा करने की इच्छा है, कृपया वे इन खातों में धनराशि भेजने का कष्ट करें। इस बात का ध्यान रखा जाय कि जिस सेवा की धनराशि भेजी जा रही है, मात्र उसी खाते की C.B.S.A/C संख्या में भेजें।

प्रणाम जी

सेण्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया

1. खाता धारक का नाम–श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रष्ट
   खाता संख्या–3290805513
2. खाता धारक का नाम–श्री ज्ञानपीठ प्रकाशन
   खाता संख्या– 3290804553

पता–शाखा–सरसावा, सहारनपुर उ. प्र. 247232

MICR-Code - 247016005

IFSC CODE-CBIN0282531

सामान्य खाता संख्या
1335000100111916
पंजाब नेशनल बैंक
सलेमपुर (सहारनपुर) उ.प्र.
RTGS/NEFT IFS
CODE - PUNB0133500

साहित्य खाता संख्या
1335000100118751
पंजाब नेशनल बैंक
सलेमपुर (सहारनपुर) उ.प्र.
RTGS/NEFT IFS
CODE - PUNB0133500

भवन निमार्ण खाता संख्या
34971188767
भारतीय स्टैट बैंक
(11439) सरसावा, सहारनपुर
उत्तरप्रदेश, पिन- 247232
IFS CODE- SBIN0011439

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा से प्रकाशित साहित्यों की सूची

क्र. स.	ग्रन्थ का नाम	मूल्य	क्र. स.	ग्रन्थ का नाम	मूल्य
1.	श्री कुलजम स्वरूप (मूल)	700.00	36.	बोध मंजरी (नेपाली)	15.00
2.	श्री बीतक साहेब टीका	400.00	37.	बोध मंजरी (उड़िया)	15.00
3.	श्री रास टीका	150.00	38.	शाश्वत सत्य की ओर	15.00
4.	श्री प्रकाश टीका	300.00	39.	सत्य को बाटो (नेपाली)	15.00
5.	श्री कलश टीका	225.00	40.	संसार से परमधाम की ओर	20.00
6.	श्री खटरूती टीका	80.00	41.	श्री प्राणनाथ महिमा	20.00
7.	श्री किरन्तन टीका (हिन्दी)	300.00	42.	श्री ब्रह्मवाणी चर्चा	65.00
8.	श्री किरन्तन टीका (अंग्रेजी)	350.00	43.	निजानन्द संस्कार पद्धति	15.00
9.	श्री किरन्तन टीका (नेपाली)	300.00	44.	सेवा पूजा	30.00
10.	श्री खुलासा टीका	250.00	45.	मूल स्वरूप की ओर	80.00
11.	श्री सनंध टीका (अप्रकाशित)		46.	चितवनी	5.00
12.	श्री खिलवत टीका	180.00	47.	आर्ष ज्योति	120.00
13.	श्री परिक्रमा टीका	275.00	48.	तारतम के निर्झर	70.00
14.	श्री सागर टीका	170.00	49.	तारतम पीयूषम्	70.00
15.	श्री सिनगार टीका	300.00	50.	हमारी शाश्वत सम्पदा	60.00
16.	श्री सिन्धी टीका	150.00	51.	खाद्य परिशीलन	250.00
17.	श्री मारफत सागर टीका (अप्रकाशित)		52.	विनाश का प्रर्याय मांसाहार	60.00
18.	श्री क्यामत नामा टीका (अप्रकाशित)		53.	विराट नक्शा (केलेण्डर रूप में)	50.00
19.	श्री मुखवाणी संगीत	150.00	54.	सौवं क्यामतनामा	90.00
20.	विद्वददमनी	200.00	55.	अनमोल मोती	5.00
21.	पट दर्शन	200.00	56.	सागर के मोती	10.00
22.	धाम सुषमा	60.00	57.	नित्य पाठ	5.00
23.	जागो और जगाओ	100.00	58.	ये स्वर्णिम पल	10.00
24.	दोपहर का सूरज	60.00	59.	मुख्तार हिन्द	20.00
25.	प्रेम का चाँद	65.00	60.	शब–ए–मेयराज	15.00
26.	निजानन्द योग	60.00	61.	अफलातूनी इलम	20.00
27.	हमारी रहनी	50.00	62.	बुलन्द मुकदमा	40.00
28.	ब्रह्माण्ड रहस्य	40.00	63.	झूठ ही झूठ	60.00
29.	श्री मद्भागवत यथार्थम्	30.00	64.	यथार्थ दीपिका	30.00
30.	ध्यान की पुष्पांजली	70.00	65.	प्रश्नमाला	5.00
31.	कड़वे सच	50.00	66.	निजानन्द चित्रकथा	30.00
32.	तमस के पार (बड़ी)	40.00	67.	शेख जी मीर जी का बयान	20.00
33.	तमस के पार (छोटी)	20.00	68.	फरमान	30.00
34.	तमस के पार (पंजाबी)	40.00	69.	स्वास्थ्य के प्रहरी	30.00
35.	बोध मंजरी (हिन्दी)	15.00	70.	सत्यांजलि	40.00

सुभाषित वचन

- विवेक, वैराग्य, अभ्यास और श्रद्धा आत्मिक साधना के मूल आधार स्तंभ है।
- जब तक नाशवान् वस्तुओं में आसक्ति या सत्यता दिखेगी, तब तक परम सत्य का बोध नहीं हो सकता है।
- कमियां निकालना छोड़िए, प्रशंसा करने की आदत डालिए। प्रशंसा और प्रोत्साहन पाकर तो चींटी भी पहाड़ लाँघ जाया करती है।
- ज्ञान का अभ्यास न करने से, भोगों में आसक्त रहने से, चरित्र के नाश से, अभिमान के कारण दूसरों का तिरस्कार करने से, देवता भी पछताते हैं। मनुष्य तो क्या?

BOOK POST

RNI:UPHIN/2016/46009
RNP/SHN/18-2019-21

प्रकाशक
पू.श्री राजन स्वामी जी

प्रकाशन कार्यालय
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा, नकुड़ रोड, जिला–सहारनपुर (उ.प्र.)
पिन कोड–247232

सम्पादक
श्री एस. पी. आर्य
भूतपूर्व आई. ए. एस.

तारतम मंजरी पत्रिका के स्वामी
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट, सरसावा
जिला–सहारनपूर, दूरभाष–8650851010
अवतरित न होने पर कृपया इस पते पर लौटाये।
धन्यवाद

सेवा में,